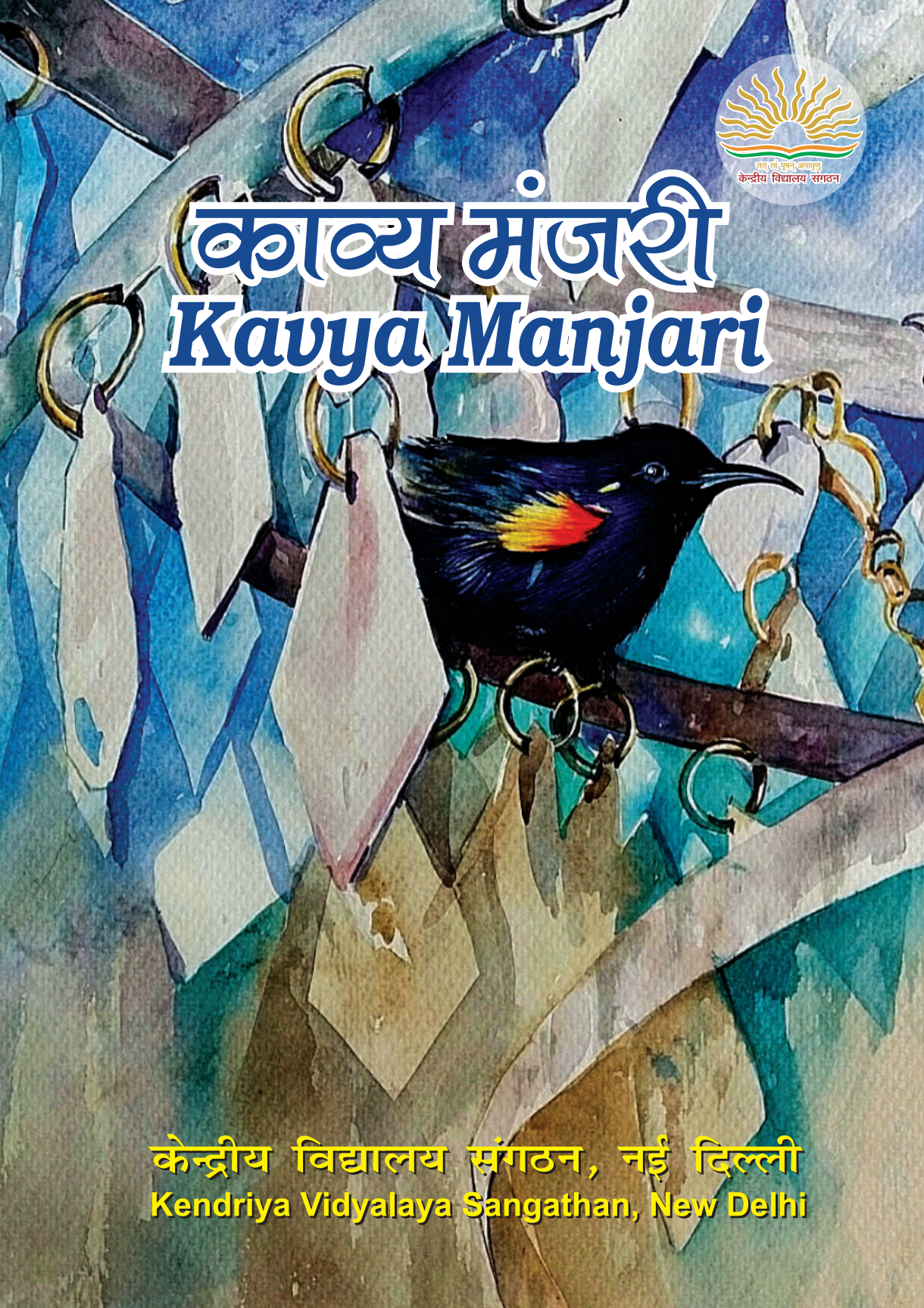

काव्य मंजरी
Kavya Manjari

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

काव्य मंजरी

भाग–14

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

dk0; e t jh] भाग–14

LFkkiuk fnol&2020 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

कुल प्रतियां: 1600

ekxn'ku	%	Jherh fuf/k ikM आयुक्त, के.वि.सं (मु.)
i/kku likdn	%	Mk- ¼Jherh½ fo- fot;y{eh अपर आयुक्त (शै), के.वि.सं. (मु)
likdn	%	Jh ,u- vkj- ejyh संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
lg&likdn	%	Jh juohj flg उपायुक्त (शैक्षिक)
likdh; iHkkjh	%	Jh lfpu jkBkj सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु)
vkoj.k i"B	%	Jherh dgd'kk टीजीटी (कला), केन्द्रीय विद्यालय आई.टी.बी.पी. देहरादून

Mk- fo- fot;y{eh] अपर आयुक्त (शैक्षिक), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित।

end : ohih,l bthfu;fjx bEiDl ik- fy-
बी–4, सेक्टर 60, नोएडा, उत्तर प्रदेश–201301

ऐसा देश बनाएँ

जिसका यश जग–जग में फैले, ऐसा देश बनाएँ,
डगर–डगर में पग–पग पर हम, गीत विजय का गाएँ।

ज्ञान और विज्ञान के
हर क्षेत्र में बढ़ जाएँ,
चीर सभी संकट के बादल
ऊषा धरा पर लाएँ।

चिर उदार भारत संस्कृति को, दिशा–दिशा ले जाएँ,
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

स्वर्णिम वर्णों में अंकित
सबसे उन्नत बलिदान करें,
कोटि–कोटि कंठों से मुखरित
भारत का जयगान करें।

अपने पौरूष सद्निष्ठा का, ध्वज जग में फहराएँ,
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

यहाँ न भाषा का झगड़ा हो
जति–पाँति का भेद नहीं,
दूर–दूर तक रहे नहीं अब
ऊँच–नीच का भेद कहीं,

स्नेहसिक्त मानव की वाणी, जन–जन तक पहुँचाएँ,
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

Mk- je'k ik[kfj;ky ^fu'kad*
शिक्षा मंत्री, भारत सरकार
एवं
अध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की वार्षिक काव्य पुस्तक 'काव्य मंजरी' का 14वां अंक पाठकों के हाथ में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक देश भर के केन्द्रीय विद्यालयों में सेवाएं प्रदान कर रहे हमारे शिक्षकों, कार्मिकों एवं अधिकारियों की भावात्मक अभिव्यक्ति का मूर्त रूप है।

यह भी एक सुखद संयोग है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अध्यक्ष और भारत के माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कवि हृदय व्यक्तित्व की साहित्यिक दुनिया में एक उत्कृष्ट पहचान है। काव्य मंजरी के इस अंक को उनकी कविता ने भी अलंकृत किया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सभी 25 संभागों से इस अंक के लिए बहुत बड़ी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुईं। चयन समिति द्वारा अंतिम रूप से जिन रचयिताओं की कविताओं का चयन किया गया, उन सभी को हार्दिक बधाई।

इस वर्ष कोरोना संकट से लड़ने में सृजनशीलता ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान हमारे समाज का कलात्मक और रचनात्मक पक्ष भी उभर कर सामने आया। घरों में रहकर भी लोगों ने अपनी सृजनशीलता के चलते न केवल स्वयं को व्यस्त रखा अपितु दूसरों को भी प्रेरित किया। केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों का रचनात्मकता पक्ष भी एक नये रूप में हमारे सामने आया।

अपने कार्यालय और परिवार के महत्वपूर्ण दायित्वों के बीच सृजनशीलता के लिए भी समय निकालना जीवन को एक नई ऊर्जा प्रदान करता है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन में हमारे सभी शिक्षक व अन्य कार्मिक अपने जीवन में यह संतुलन बनाए रखने में सफल हुए हैं। 'काव्य मंजरी' का सतत प्रवाह इस बात की पुष्टि करता है।

'काव्य मंजरी' के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कार्मिकों की यह सामूहिक अभिव्यक्ति सबको प्रेरित करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। पुनः एक बार सभी रचनाकारों की प्रशस्ति करते हुए, पुस्तक के संपादक मंडल एवं चयन समिति के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

¼fuf/k ik.M½
आयुक्त

कविताओं की सूची

Ø	'kh"kZd	jpf;rk dk uke	i`"B la-
1	राष्ट्रीय शिक्षा नीति	मनीष रायकवार	1
2	कर्मयोग	अशोक कुमार शर्मा	2
3	आज तक	श्रद्धा झा	3
4	कोरोना से संघर्ष	प्रवीण कुमार	4
5	पतंग	पवन कुमार	6
6	कर्मवीर	नवीन कुमार झा 'शरद'	7
7	ज्ञानदीप हम मिल बालेंगे	हेमा आनंद दाते	8
8	हरी–भरी फिर हो धरा	मनोज शर्मा	9
9	अनमोल है मुस्कान	मनीषा दुबे	10
10	सोच	मोनिका एच एस नोटे	11
11	मानवता का शैक्षिक आंदोलन	हेमलता सोनी	12
12	क्या दूँ	पूनम कौशिक	13
13	ग़ज़ल	नीलेश अग्रवाल	15
14	कायर ना बन	राजकुमार डायल शुभम	16
15	ज़मीर	डॉ. चंद्रजीत यादव	17
16	गणित की महिमा	चन्द्र प्रकाश तिवारी	18
17	माँ गंगा का प्रदूषण हमें हटाना है	वी.के. त्यागी	20
18	मृगतृष्णा	पूजा श्रीवास्तव	21
19	मानवता की दशा	रेंवता राम	22
20	आँखें मेरी सजल हो जातीं	गिरिराज धरण व्यास	23
21	राष्ट्र कवि दिनकर के प्रति	राघवेन्द्र कुमार दीक्षित	24
22	राष्ट्रधर्म	डॉ. आनन्द कुमार त्रिपाठी	25
23	मैं कल भी सुन्दर थी, आज भी सुन्दर हूँ	संगीता ज़ैदी	26
24	दीवार	देवेन्द्र कुमार	27
25	दीया और बाती	मनीष कुमार गुप्ता	28
26	हे! मनुष्य	सूर्यकांत नंद	29
27	विश्वास	कल्पना वर्मा	30
28	हम कहाँ जा रहे हैं	रतन कुमार	31
29	जो मैं न रहूँ	पी. सुचित्रा	33

Ø	'kh"kZd	jpf;rk dk uke	i`-l-
30	जीवन सरिता	रश्मि द्विवेदी	34
31	वर्तमान परिस्थिति	सहजानन्द कुमार	35
32	सृष्टि संरक्षण– सबका रक्षण	डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा	36
33	राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा बने हिंदी	दिलीप कुमार शर्मा	37
34	फुटपाथ के बच्चे	महेन्द्र कुमार मौर्य	39
35	हमने रिश्तों को मरते देखा है!	महेश कुमार मीणा	40
36	जीवन की सच्चाई	मीरा मुमताज बेगम	42
37	शिक्षक–प्रजागरण	नवनीत कुमार	43
38	पिघलते बादलों के बरसने का इंतजार है मुझे	अनिल कुमार गुप्ता	44
39	कहाँ तक	डॉ. सीमा प्रधान	45
40	दौड़ लगाओ पूरे जोश से	संजय कुमार जैन	46
41	क्षुधा से सिद्धि	प्रकाश चन्द्र तेवाड़ी	47
42	नव प्रभात	पूनम शुक्ला	49
43	मजबूर चिड़िया	सोहन लाल	50
44	आह्वान!	सुजाता चौकिया	51
45	सुलगती धरा	संगीता एम. चौहान	52
46	स्वर्णिम दीपक जलते रहना	स्वर्ण लता शर्मा	53
47	जिन्दा है मेरा शहर!	अवनि प्रकाश श्रीवास्तव	54
48	अखंड भारत	भावना गुप्ता	55
49	मुश्किल भरे दौर	शबनम ठाकुर	56
50	विचारों का प्रदूषण	उमाशंकर पंवार	57
51	कविता के आयाम	नेत्र सिंह	59
52	क्योंकि मैं शिक्षक हूँ	कुलदीप कुमार	60
53	बादलों के पार	डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय	61
54	आओ पेड़ लगाएँ	अरविन्द कुमार	62
55	संकल्प	जयंती उपाध्याय	63
56	आत्म विश्वास	वेद प्रकाश मीना	65
57	हम ऐसा किरदार बनें	त्रिवेन्द्रधर बड़गैयाँ	66
58	भिखारी का स्वाभिमान	नाहर सिंह मीणा	68

Ø	'kh"kd	jpf;rk dk uke	i-l-
59	किसे दूँ मैं अपना ये सलाम	रमेश कुमार	70
60	बेटी की पीड़ा	रवि कुमार	72
61	जरा सोचो	राजेश्वर प्रसाद यादव	73
62	जीवन क्या है	नितिन कुमार मिश्र	74
63	जीवन में कभी रुकना नहीं	रामानुज कुमार	75
64	तिमिर से लड़ता दीपक	पूनम कपिल शर्मा	76
65	दोहे	दिनेश उपाध्याय	77
66	दौर–ए–जिन्दगी	संजय कुमार	78
67	ना हारी हूँ!	कैलाश चन्द रैगर	79
68	नारी का सम्मान	शिव प्रकाश शर्मा	80
69	बुजुर्ग और हम	रवीन्द्र कुमार यादव	81
70	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	विजेन्द्र	82
71	बेचैन पाठशाला	विनोद कुमार	84
72	मंजिल खुद पास आएगी	विनीता नरूला	85
73	माँ की बहुत याद आती है	डॉ. नूतन पुंज	86
74	मानवता का शैक्षिक आंदोलन	हेमलता सोनी	88
75	तू अपने सपने के लिए युद्ध कर	मीता गुप्ता	89
76	वो बचपन एक फूल था	गोपाल प्रसाद झा	90
77	मैं सृष्टि हूं	रीता कुमारी	91
78	लोहे की मशीन	श्रीधर पाण्डेय	92
79	वन में सावन	दयानन्द भोई	94
80	चप्पलें	गौरव शर्मा	96
81	तमन्ना	बी.एल. मोरोडिया	97
82	मुस्कान	लालचन्द राम	98
83	पेंसिलों ने जो कहा	प्रवीण	99
84	हम सबका अभिमान–केंद्रीय विद्यालय	लेखराज मीना	100
85	बिन्दु से सिंधु तक	पी.सी. खुल्बे	101
86	अजनबी शहर	प्रदीप कुमार	103
87	मंजिल दूर नहीं	सीमा शर्मा	104
88	मेरी जिम्मेदारी	नन्द किशोर छंगाणी	105

S. N.	Title	Name of Poet	P. No.
89	Freedom	S Radha	106
90	A Suggestion	Manisha Sharma	107
91	'Better' in 'Worst' Out	Jitendra Singh	109
92	Each Drop Counts	Pooja Chauhan	110
93	A Tale of Corona	Rahul Chakrakar	111
94	The Earth NeedsA Break	R. Sujatha	113
95	A Step Towards Self Reliance	Sarita Ambrose	115
96	Fortitude: An Indispensable Chum	Dr. S.S. Aswal	116
97	Homecoming	Ishita Mallick	118
98	In Search Of The Lost Lamb	Bindhu R. Mathew	119
99	Indelible 2020 - A Nightmare	Dr. B. Lava Kumar	120
100	Is It Enough?	Shesha Prasad Nadupalli	122
101	Musings With School Mates	J.S.V. Lakshmi	123
102	The Unknown Soldier	G Jyothi	124
103	Circle of Life	Dhwanika Bhatt	125
104	In Line With On-Line	Jyothi V.N.	126
105	Patriarchal Cage	Simranjeet Kaur	127
106	Life is Bliss	N. Padma	129
107	Silver Lining to the Cloudy Covid	J. Rama Devi	130
108	En Route	Mary Francina A.A.	132
109	My Calling	Roselyn Khawbung	133
110	Be Optimistic in Adversity	Narendra Singh	134
111	One Writ(h)es	Santhosh Kumar Kana	135
112	We Shall Survive	Geetha S. Nair	136
113	Being An Academic Corona Warriors	Jyoti Sharma	137
114	Best Friend	Amit Kumar Pandey	139
115	Divine Call	Nita Patra	140
116	A Change With In	Anita Paul	141
117	Life	Sridevi Vijay Shinde	142
118	Teacher	Asha Yadav	143
119	The Lofty Pines	Ramesh Chandra	144
120	Tribute to My Kingdom	G. Vijay Lakshmi	145
121	Working Woman	Rita Attri	147
122	Recalling Gandhiji in Covid-19	Biranchi Narayan Das	148
123	Soft Winter Sunshine	Mukesh Kumar	149

1
राष्ट्रीय शिक्षा नीति

हो समावेशी, हो सर्व सुलभ, हो शिक्षा सबका अधिकार।
यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान समय की है पुकार।।

यह विश्वगुरु सदियों से है, साहित्य, कला हो या विज्ञान।
सबको समानता देता है, भारत का अद्‌भुत संविधान।।
लिंग, जाति, आर्थिक विषमताओं, का खुल कर करती प्रतिकार।
यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान समय की है पुकार।।

हैं वर्ग कई जो पिछड़ गए, कुछ कुप्रथाओं के घेरे में।
जीवन जीने को विवश हैं जो, अज्ञान के घोर अँधेरे में।
शिक्षा का दीप प्रकाशित हो, हर आँगन और हर द्वार–द्वार।
यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान समय की है पुकार।।

नारी जो अशिक्षित रह जाए, पीढ़ियाँ अशिक्षित रह जाएँ।
नारी जो शिक्षित हो जाए, फिर राष्ट्र भी विकसित हो जाए।
नारी शिक्षा है मूल मन्त्र, नई शिक्षा नीति का आधार।
यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान समय की है पुकार।।

लिंग और तन से जो हैं विशेष, उनसे भी बनता है ये देश।
वे भी हैं समाज के अभिन्न अंग, यही शिक्षा नीति का सन्देश।
जन–जन को सुलभ सुनिश्चित हो, शिक्षा का यह अद्‌भुत उपहार।
यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति, वर्तमान समय की है पुकार।।

euh"k jk;dokj
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, बी.एस.एफ. कृष्णानगर (प.बं.)

2
कर्मयोग

भाग्य की बैसाखियों का ले सहारा,
तुम सफलता की डगर पर क्या चलोगे?

कर्म की छैनी अगर तुमने छुई ना,
पत्थरों से तुम खुदा कैसे गढ़ोगे?

राह वो क्या राह, जो दुर्गम नहीं है?
बढ़ चलो, इतिहास तुम एक दिन रचोगे.

हर पराजय जीत का पहला चरण है,
बिन गिरे, बेहतर संभलकर क्या चलोगे?

गर मिटा भी यार, तो तू याद रखना,
मील के पत्थर सदृश गौरव गहोगे,

कर्मयोगी भाग्य को कब पूजते?
अब नहीं तो कब सृजन–पथ पर बढ़ोगे ?

भाग्य की बैसाखियों का ले सहारा,
तुम सफलता की डगर पर क्या चलोगे?

v'kkd dqekj 'kekZ
स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
केंद्रीय विद्यालय क्र. 2 शिवाजी नगर, भोपाल

3
आज तक

कौन–सा दुःख ना सहा है आज तक।
आँख से कुछ ना कहा है आज तक।

गुंबदों में कैद इक आवाज–सा
दर्द को जिंदा रखा है आज तक।

आपसे मिलना बिछुड़ना बस यही,
बस यही मैंने लिखा है आज तक।

मुस्कुराहट–कहकहे, आँसू–रुदन,
झूठ था, पर सब किया है आज तक।

प्यार तेरा एक सपने की तरह
रात में रिमझिम बहा है आज तक।

J)k >k
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

4
कोरोना से संघर्ष

हम हैं भारत की संतान,
संकट काल में, विपदा में,
धैर्य है, हमारी पहचान,
मानवता पर छायी कोरोना रूपी संकट में,
जीजीविषा की अदम्य उत्कंठा लिए
मानव मात्र की सेवा में लीन डॉक्टर, नर्स,
पुलिस वाले एवं पैरामेडिकल स्टाफ हैं हमारी पहचान
धैर्य का आलम्ब धर, कोरोना से मुकाबला कर,
जोश से एवं होश से,
सरकारी निर्देशों का पालन कर,
राह दिखा विश्व को,
अपने अदम्य साहस का, सुझबूझ का, अपनी राष्ट्रभक्ति का,
परमार्थ का, परोपकार का,
राष्ट्रहित को आगे रख, तात्कालिक लाभ को दूर रख,
दूर रहकर, घर में रहकर,
कोरोना का प्रसार रोक
नष्ट कर, समूल नाश कर,
इस बीमारी को परास्त कर,
तू श्रेष्ठ था, तू श्रेष्ठ है,
अभिष्ट यही सिद्ध कर,
दिखा अपने शौर्य को,
दिखा अपनी नेतृत्व क्षमता को,
दिखा राह सारे विश्व को, परास्त कर कोरोना को,
प्रधानमंत्री जी के निर्देश का पालन कर, पालन कर,
संकट की घड़ी है, आपदा है, बिपत्ति है,

देश कोरोना के संकट में है, मानवता संकट में है,
देश की परीक्षा है, मानवता की परीक्षा है,
आओ मिलकर संकल्प लें,
कोरोना को हराने का, यत्न करें, प्रयत्न करें,
सफलता को सिद्ध करें, आओ मिलकर दीया जलाएँ,
भारत के राष्ट्रीय आत्मबल की पहचान करायें।

çoh.k d|ekj
प्रशासनिक अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली संभाग

5
पतंग

ओ पतंग कौन है तेरे संग, जो इतना बलखाती है।
आसमान से करती बातें, तू किसका संग पाती है।

बांस की वो तीली, जो हवा से भी ना हीली।
कागज उसे अपने संग, ले कैसे उड़ जाती है।

ये किस जादू का जोर है,
क्या रिश्तों का राज ये डोर है।
कला तुझमें है या हाथ में,
जो उड़ती हवा के साथ में।

बुलंदियों को छू, तू दिल को बहुत भाती है।
पर उड़ती है कैसे, कुछ समझ नहीं आती है।

तू अपने प्रतिबिंब में, मेरे अन्तर्मन को दर्शाती है।
पतंग डोर–सी है ये जिंदगी, यही सीख तू सिखलाती है।

iou d|ekj
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय आस्का

6
कर्मवीर

चलकर गिरना, गिरकर उठना
कर्मवीर की रीति है,
मंजिल–पथ पर आगे बढ़ना
कर्मवीर की नीति है।

बाधा–शूल रोक रहा पथ
पीछे कभी न हटता,
रौंद उसे अपने चरणों से
नित आगे ही बढ़ता।

राह रोक गिरि सीना ताने
अट्टहास है करता,
पार उतरता शिखर विजय कर
लक्ष्य प्राप्त है करता।

मानव जीवन समर–भूमि
कर्म ही वीरों का शमशीर,
कर्म ही पूजा, त्याग, तपस्या
राही सच्चा कर्मवीर।

uohu dqekj >k Þ'kjnß
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, गढ़हरा (बरौनी)

7
ज्ञानदीप हम मिल बालेंगे

भेष बदल कर समय है आया।
विकराल रूप काल ने दिखलाया।
कोविड–19 विषाणु का साया,
दुनिया भर पर है मंडराया।

गर परिवार–मित्र हैं प्यारे,
तो नहीं छोड़ना घर और द्वारे।
घर के भीतर रहकर गुरुवर,
ज्ञान–दीप हैं घर–घर बारे।
साफ–सफाई अपनाओगे तो,
हारेंगे संकट अब सारे।

बने गुरु अब खुद भी चेले,
तकनीकी ज्ञान के नये झमेले।
समय बना कैसा जादूगर,
जज्बातों से पल–पल खेले।

ना दिन की सुध, ना चैन की रात,
काम में खोए हैं दिन रात।
पर घुटने ना टेकेंगे हम,
हिम्मत से देंगे, दुश्मन को मात।

बिना फोन और नेटवर्क के,
बच्चे ना कक्षा में आते।
मातु–पिता की लाचारी भी,
दुःखी मन से हमको बतलाते।

ज्ञान–पिपासु बच्चों के संग,
पर शिक्षक भी रम जाता है।
लेकिन जो ना जुड़ पाते हैं,
उन खातिर मन भर आता है।

आधुनिक तकनीक के फिर सब,
हमजोली भी बन जाते हैं।
मंजिल तक पहुँचाने बच्चों को,
हम जी–जान से भिड़ जाते हैं।

कहता है विश्वास हमारा,
कभी ना बाजी हम हारेंगे,
हर द्वारे और गलियारे में,
ज्ञानदीप हम मिल बालेंगे।

gek vkuun nkr
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी अम्बाझरी

8
हरी-भरी फिर हो धरा

धरा वायु आकाश जल, सभी प्रदूषित आज।
फिर भी मानव को नहीं, आती है क्यों लाज।।
बदला मौसम कर रहा, फसलों को नुकसान।
सोच–सोच इस बात को, कृषक हुए हलकान।।
वर्षा में पानी नहीं, नहीं ठंड में शीत।
मौसम के इस हाल से, सभी लोग भयभीत।।
लोग प्रदूषित कर रहे, धरती से आकाश।
जाने अनजाने करें, खुद ही खुद का नाश।।
वृक्षों को मत काटिए, ये धरती के वस्त्र।
मानुष लालच में करे, माता को निर्वस्त्र।।
स्वच्छ रहे पर्यावरण, ऐसा करें प्रयास।
आने वाली नस्ल ले, शुद्ध हवा में श्वास।।
प्राणी धरती से हुए, जाने कितने लुप्त।
अब भी मानव चेत जा, नहीं बैठ अब सुप्त।।
वर्षा का जल संचयन, करें अगर हम लोग।
धरती पर होगा नहीं, सूखे जैसा रोग।।
हरी भरी जब हो धरा, लगती स्वर्ग समान।
बिन कानन लगने लगी, धरती माँ वीरान।।
धरती माँ के श्राप का, भोगेंगे हम कोप।
हरी–भरी फिर हो धरा, इतने पौधे रोप।।

eukt 'kekZ
सहायक अनुभाग अधिकारी
केंद्रीय विद्यालय हैप्पी वैली शिलांग

9
अनमोल है मुस्कान

दिल की खुशी की पहचान होती है मुस्कान,
अंधकार में दीप जलाती है मुस्कान,
लगता है जब कोई अनजान अपना सा,
तो ह्रदय के द्वार खोलती है मुस्कान।

होठों के पीछे छुपी रहती है मुस्कान,
जीवन की पहेली सुलझाती है मुस्कान,
मुश्किलें आती है जीवन की राह में,
हर मुश्किल को दूर भगाती है मुस्कान।

अपनी मंजिल को पाने पर खिलती है मुस्कान,
निराशा में आशा का संचार करती है मुस्कान,
जीत की नई परिभाषा है मुस्कान,
उम्मीद की किरण जगाती है मुस्कान।

न जाने कितने रूपों में होती है ये मुस्कान,
पर आखिर में सबका मन जीत लेती है मुस्कान,
मुस्कुराते रहो हर पल, सुबह और शाम,
क्योंकि अतुल्य और अनमोल है मुस्कान।

euh"kk nqc
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय महू

10
सोच

सोच हमें बदलनी होगी
राह नई चुननी होगी
लड़के लड़की के भेद
को मिटाना होगा।
लड़का लड़की है एक समान
यह भाव हमें लाना होगा।
सच्ची लगन से
यह कार्य निभाना होगा
कन्या भ्रूण हत्या के
पाप से अपने आप को
बचाना होगा।
सोच हमें बदलनी होगी,
राह नई चुननी होगी
लड़के लड़की के भेद को
मिटाना होगा।
लड़का लड़की है एक समान
यह भाव हमें लाना होगा।
यदि कन्या भ्रूण हत्या
न रुकी
तो थम जाएगा
एक दिन नए जीव का सृजन
यदि कोख ना होगी
तो कहां लेगा लड़का जन्म
सोच हमें बदलनी होगी
राह नई चुननी होगी
लड़का लड़की के भेद को
मिटाना होगा
लड़का लड़की है एक समान
यह भाव हमें लाना होगा।
लड़कों को ही नहीं लड़कियों को
भी पढ़ाना होगा
कई लक्ष्मीबाई
कई कल्पना चावलाओं को
जन्म दिलाना होगा,
सोच हमें बदलनी होगी
राह नई चुननी होगी
लड़के लड़की के भेद
को मिटाना होगा
लड़का लड़की है एक समान
यह भाव हमें लाना होगा।

ekfudk ,p-,l- ukVh
पी जी टी (अर्थशास्त्र)
केंद्रीय विद्यालय अंबाझरी

11
मानवता का शैक्षिक आंदोलन

केंद्रीय विद्यालय संगठन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।
संस्कृति सभ्यता संस्कार का गठन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

उच्च विचार उच्चतम शिक्षण,
हर क्षण करते मार्गदर्शन,
विलक्षण हमारे गुरुजन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

कब बुलबुल स्काउट गाइड,
करते अनुशासन में संतुलन,
सेवा का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

मन कर्म वचन से बच्चे,
रहते हमेशा मगन लगन से,
करे शौर्य से देश को रौशन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

विद्यालय का वातावरण,
करे सरस्वती का आवाहन,
महकाता व्यक्तित्व का उपवन
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

geyrk lkuh
पीजीटी (सी.एस.)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 02 सीपीई इटारसी

12
क्या दूँ?

चाहती हूँ उन्हें कुछ दूँ,
जिनका मैं अंश हूँ,
जिन्होंने मुझे शैशवावस्था से
धूप, छांव से बचाया है,
एक द्वन्द है;
स्वयं का स्वयं से,
बहुत कुछ अर्पित करने को;
जी ललचाया है,
उस माँ को, जिसने स्वयं गीली काया कर;
मुझे सूखे में सुलाया,
मेरी प्रेरणा हैं, वह पिता;
जिनका हाथ सदैव अपने सिर पर पाया है,
जब भी कभी टूटी हूँ;
उन्हीं के पावन हृदय में,
आश्रय पाया है;
मेरे मंदिर के बुझे दीपक को,
उन्होंने ही जलाया है;
बचपन से लेकर आज तक,
कोई विकार नहीं आया है;
चूँकि, मुझ पर उनके संस्कारों का साया है
भौतिक वस्तु की जरूरतें तो शायद;
अधिकांश पूरी कर देते हैं,
इसके साथ–साथ;
उन्होनें मेरी अंतश्चेतना को
दीप्तिमान बनाया है;

जीवन का गीत यदि मैंने गाया है,
तो उसे गाना उन्होंने ही सिखाया है;
चाहती हूँ, जैसे उन्हें न जाने क्या दे दूँ,
किन्तु ऐसा कुछ नहीं है पास मेरे;
जो कर सकूँ उन्हें अर्पित,
सब कुछ उन्हीं से पाया है;
फिर कहाँ से क्या करूँ अर्जित,
जो करूँ उन्हें समर्पित;
कोई बताए उन्हें मैं क्या दूँ
चाहती हूँ, खिले हुए फूल;
उनकी झोली में डाल दूँ,
उनके पथ के काँटों को;
अपने दामन में बाँध लूँ,
किन्तु यह सभी कुछ;
आता है, तुच्छ नजर मुझे,
उनके त्याग और वात्सल्य के सामने;
गहन कशमकश में फँसी हूँ,
यही आन्तरिक द्वंद्व मुझमें;
रह–रहकर उछाल भरता है,
आखिर क्या दूँ उन्हें;
जिनका मैं अंश हूँ,
क्या दूँ–क्या दूँ?

iue dkf'kd
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय केशवपुरम

13
ग़ज़ल

देखते हैं परखते हैं नज़र में तो मानते हैं
दुनियादार कहाँ कुछ बस यूँ ही मानते हैं

कुछ तो नशा है इन दरिया औ कोहसारों* में
जोगी हैं जो खाक दर–दर की छानते हैं

अपने पाँव के छालों की फिक्र करो जनाब
हम तो शोलों में भी चलने का हुनर जानते हैं

तुम बस साहिल पे बैठ कर लहरें गिना करो
मंझधार उन्हें प्यारे जो लड़ने की ठानते हैं

ऐसे खरीदारों से बच के गुज़र ऐ सौदागर
जो हर सामां की कीमत ईमाँ माँगते हैं

*कोहसार–पहाड़

uhy'k vxzoky
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, छिन्दवाड़ा

14
कायर ना बन

कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।
त्याग भोग का सुखकर होगा, संकल्पित लक्ष्य पाना है।

माना हमने ये पथ है मुश्किल, पर देख बाधाएँ भागे क्यों?
काली अंधियारी रातों से, भयभीत बने और जागे क्यों?
साहस दीप ज्योतित करके, प्रकाश तुम्हे फैलाना है।
कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।

देख चींटी जब चलती जाती, सौ योजन को पाती है।
पक्षीराज ना पाता मंजिल, गर नींद उसे लुभाती है।
आलस प्यास को छोड़ धरा पर, आगे बढ़ते जाना है।
कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।

सुन जग के ताने रोएँ क्यों, तू टूटा गगन का तारा है।
उठ हाथ बढ़ाकर छीन ले सब, जिसपे अधिकार तुम्हारा है।
कातर क्रन्दन करके ये, जीवन नहीं गँवाना है।
कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।

मंजिल दिखती है दूर कहीं, मार्ग ये सागर गहरा है।
कांटे बिखरे हैं वन जीवन में, हिंसक पशुओं का पहरा है।
पर तुमको अब विश्राम कहां, विजय ध्वज फहराना है।
कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।

बस अब है पक्की जीत यहाँ, जो कर्म धर्म को है स्वीकारा।
भाग्य भी उसके चरण पखारे, जो हार कर भी कभी ना हारा।
बार बार कोशिश करना ये, लक्ष्य नहीं बिसराना है।
कायर ना बन कोशिश कर, तुम्हें नीलगगन पर छाना है।

jkt dqekj Mk;y ^'kqHke^
प्र. स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय श्रीगंगानगर छावनी

15
ज़मीर

लहू से तर शरीर जिंदा है,
मेरा ज़ख्मी जमीर जिंदा है।
रह नहीं सकता पाखंड वहाँ,
जहाँ कोई कबीर जिंदा है।
वहम है उसको देह जीत गया,
मेरे रूह की शमशीर जिंदा है।
मुश्किलें लाख पैदा कर तू मेरी राह में,
उसकी दुआओं की तासीर जिन्दा है।
गर हाथ भी कलम हो गए तो क्या
मेरे कोशिश का तीर जिंदा है।
आएंगे फल जरूर कुछ, रोटी के पेड़ में,
हार की जीत का नज़ीर जिंदा है।

Mk- pæthr ;kno
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि. जगदलपुर बस्तर

16
गणित की महिमा

गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा
संगीत में है गणित, गणित विचार शक्ति में
छन्द अलंकार और गणित तर्क शक्ति में
गणित आय–व्यय और गणित अर्थशास्त्र में
भौतिक–रसायन में गणित, और गणित पाकशास्त्र में
समझ–समझ कर बढ़ते जाओ, यही एक है गणित का नारा
गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा

अनुपातों का योग हुआ तो, मिश्रण एक तैयार हुआ
प्रयोग हुआ जब इस मिश्रण का, तो पोखरण में विस्फोट हुआ
सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी तारे, गणना करके चलते सारे
जब भारत ने खोजा जीरो, भारत बन गया विश्व का हीरो
नम्बर सिस्टम बना दिया, ये जीरो तो है सबसे न्यारा
गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा

इधर जोड़–जोड़ के बनो करोड़पति, उधर आ गई ट्रिगनोमेट्री
कोण का मान पता चलते ही, एवरेस्ट की दिख गयी चोटी
अब अगली शाखा बीजगणित की, सब कुछ माना एक्स हो गई
एक्स के मान की गणना की तो, पूरी दुनिया गोल हो गयी
चमक उठी तब सारी दुनिया, बह निकली जब विद्युत धारा
गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा

अक्षों वाली ज्योमेंट्री में, ग्राफ बना के जब ये देखा
सब कुछ तो आसान हो गया, बिन्दु–बिन्दु से खींची रेखा
रेखाएं जब हुई समान्तर, तब उन पर भी दौड़ी रेल

समय का अंतर देख–देख के, बैलगाड़ी हो गई फेल
कोना–कोना जोड़ के देखा, एक हो गया देश हमारा
गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा

उड़ान भरी जब गणित ने अपनी, तो मीलों दूरी ढेर हो गयी
वैदिक गणित जब प्रयोग में आयी, सब की गणना फास्ट हो गयी
सांख्यिकी में आँकड़ों को लेकर, औसत की गणना कर डाली
सम्भावनाओं की प्रायिकता में, गणित की हो गयी अमर कहानी
इसीलिये कहते हैं यारों, करना ना गणित से किनारा
गणित विषय है सबसे प्यारा, गणित से रोशन ये जग सारा

pUæ çdk'k frokjh
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय ए.एम.सी. लखनऊ

17
माँ गंगा का प्रदूषण हमें हटाना हैं

मां गंगा का प्रदूषण हमें मिटाना है यह हम सबने ठाना है,
मां गंगा को स्वच्छ बनाना है यह हम सबने ठाना है,
मां गंगा करोड़ों भारतीयों की आस्था का प्रतीक,
मां गंगा करोड़ों भारतीयों के मोक्ष का प्रतीक,
मां गंगा करोड़ों भारतीयों की प्यास बुझाती,
मां गंगा करोड़ों भारतीयों की खेती की सिंचाई का प्रबंध करती,

मां गंगा करोड़ों भारतीयों की जीवनदायिनी,
मां गंगा करोड़ों भारतीयों को मोक्ष प्रदायीनी,
मां गंगा गंगोत्री से अपना सफर शुरू कर,
गंगासागर में अपना सफर पूरा करती,
अपने किनारे सभी की प्यास बुझाती,
मां गंगा को हमने मैला किया,
मां गंगा को हमने प्रदूषित किया,

मां गंगा को हमने निर्मल गंगा से गन्दे नाले में परिवर्तित कर दिया,
मां गंगा को हमने शहरों का सीवर व फैक्ट्रियों का
जहरीला रसायन मिलाकर जहरीला बना दिया,
मां गंगा को हमने प्रदूषित कर नहाने लायक नहीं छोड़ा,
मां गंगा को हमने जहरीला बनाकर आचमन लायक नहीं छोड़ा,
मां गंगा को पुनः नहाने लायक बनाना है मां गंगा को
पुनः आचमन लायक बनाना है,
मां गंगा का प्रदूषण हमें मिटाना है यह हम सबने ठाना है
मां गंगा को स्वच्छ बनाना है यह हम सबने ठाना है,

oh d; R;kxh
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, रूड़की

18
मृगतृष्णा

रमता जोगी जोगड़ा तू कित अलख जगाए
बूंद–बूंद मोती झरे सावन बीता जाए।

विनती करूँ हरि आपनो केहि बिधि मिलन हुवाए
कस्तूरि कुंडलि बसै हिराणी जंगल भाए।

ज्ञान, भगति, सेवा, धर्म सगरे करम कराए
जस तस मन व्याकुल हरि, केहि बिधि चैन न पाए।

मीरा मिलयो, तरे कबीरा, राधा रमण कहाए
मैं धूलि इन चरणन की, कासौ चरन पखाए।

छुटी नगरिया, बीती उमरिया कछु न करे कराए
यों जनम तर जाऊं हरि अब आपहि करौ उपाय।

ज्यो फूँके हरि मैं तर जाऊं, बंसी लियो बनाए
ज्यों तरहों हरि चरनन, तन बन पाथर ठोकर खाए।

अब मैं जानूँ हरि! केही के कारण मोहे इतने जनम घुमाए
जब तक माखन छांछ न उबरे, मथनी चलती जाए।

i|tk JhokLro
प्राचार्या
केंद्रीय विद्यालय महू

19
मानवता की दशा

मानव होकर मानवता पर, क्यूं कलंक लगा रहा है?
ईश्वर ने भेजा तुझे इस धरा पर, कुछ नेकी करने को,
तू इस कदर क्यूं उस पर कलंक लगा रहा है?
बेजुबां का हत्यारा बनकर, क्यूं स्वयं को दानव बना रहा है?
करनी हो तो नेकी कर, इस कदर जीवन व्यर्थ क्यूं गंवा रहा है?
मानव होकर, क्यूं दानव के कृत्य कर रहा है?
मानव है तू मानवता दिखाने से क्यूं घबरा रहा है?
आया था जिस ध्येय के साथ इस धरा पर,
उस ध्येय को क्यूं भुला रहा है?
तू मानव है मानवता दिखाने से क्यूं घबरा रहा है?
करनी है तो कुछ नेकी कर, इस कदर जीवन व्यर्थ क्यूं गंवा रहा है?
जिसने तेरी रचना की, उसी को क्यूं मिटा रहा है?
बनना है तो प्रकृति–प्रेमी बन, उसका दुश्मन क्यूं बन रहा है?
तू मानव है, इस बात को क्यूं भुला रहा है?
मानव होकर मानवता पर क्यूं कलंक लगा रहा है?
जिस मिट्टी से तू बना है, उसी में मिल जाएगा,
इसका भान होते हुए भी, क्यूं इतना इतरा रहा है?
मानव है तू, क्यूं इस कदर सीमाओं को लांघ रहा है?
मृण–कण इतिहास तेरा, यही तो भविष्य है,
फिर क्यों इस पर कलंक लगा रहा है?
मानव होकर मानवता पर क्यूं कलंक लगा रहा है?
मानव है तू मानवता दिखाने से क्यूं इतना घबरा रहा है?

jiork jke
स्नातकोत्तर शिक्षक (भूगोल)
केन्द्रीय विद्यालय नं0 1 कालीकट

20
आँखें मेरी सजल हो जाती

प्रसव–पीड़ा को सहन करती
संतानों को सुख देती रहती
अपना पेट काटती रहती
पर बच्चों की भूख मिटाती
बुढ़ापे में दुःख को सहती
एक निवाले को तरसती
पर भूखी रहकर भी ममता
संतान सुख की इच्छा करती
देख–देख मातृत्व–प्रेम को
आँखें मेरी सजल हो जाती

मां का सीना चीरती रहती
हल–कुदाल चलाती रहती
धन–धान्य उपजाती रहती
अपनी लालसा–पूर्ति करती
मानव–संतान हृदय बेधन करती
स्वार्थ की खातिर अपनी मां को
ऊसर–बंजर बनाती
फिर भी प्रेम के वश की खातिर
नित–निरंतर दुःख को सहती
देख–देख समर्पण– भाव को
आँखें मेरी सजल हो जाती
वृद्धाश्रम में बैठी रहती
पिछली स्मृतियों में खो जाती
यादें अपने सम्बन्धियों की
चेहरे पर मुस्कान हैं लाती
एक आँख तो रोती रहती
दूसरे आँख से वो मुस्काती
करुणा–प्रेम को संतुलित करती
संतान–कल्याण कामना करती
देख–देख वात्सल्य–भाव को
आँखें मेरी सजल हो जाती

जीवन भर देती ही रहती
प्रेम लुटाती सुख लुटाती
दुःख को अन्दर सहती रहती
घुट–घुट कर ही जीती मरती
पर चेहरे पर शिकन न आती
चक्की के पाटों की भांति
अहर्निश मां चलती रहती
कर्तव्य–पथ पर आगे बढ़ती
देख–देख वात्सल्य–भाव को
आँखें मेरी सजल हो जाती।

fxfjjkt /kj.k 0;kl
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 सेना जोधपर

21
राष्ट्र कवि दिनकर के प्रति

हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण
तुम तुमुलनाद,
तुम दीप्तभाल,
तुम प्रलयंकर
तुम हर हर हर,
तुम काव्य प्रखर
तुम गंग गान।
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।

तुम ही इस धरती के श्रृंगार
तुम ही हो, वह कवि अपार
तुम विकल हृदय
तुम उर्वशी गान।
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।

हे कवि विराट!
तुम जन–कवि
तुम जन–पुकार
तुम कवि भास्वर
तुम परशु ओज
तुम नव सरोज
तुम करुण कथा
तुम कर्ण व्यथा
तुम गांधी–पथ
तुम कुरुक्षेत्र
तुम साम–गान
तुम देशाभिमान
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।

हे कवि–श्री!
हे नील कुसुम
तुम द्वंद्वगीत
हे प्रणभंग
तुम धूप–धुआँ
तुम धूप–छाँह
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।
हे रश्मिरथी
हे चक्रवाल
तुम रसवन्ती
तुम ही हुंकार
हे सामधेनी
तुम कवि महान
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।

हे पूर्वज
हे कविकुल
हे कवि किरीट
हे जन नायक
हे जन गौरव
हे कवि–मान
हे दिनकर! तुम राष्ट्र प्राण।

jk?koUæ dekj nhf{kr
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय पुष्प विहार

22
राष्ट्रधर्म

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे की, खातिर लड़ना नादानी है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख जो भी हैं, वे पहले हिन्दुस्तानी हैं।

निज मातृभूमि की सेवा सम, कोई सत्कर्म नहीं है,
निज राष्ट्रधर्म से ऊपर कोई भी धर्म नहीं है।
सर्वधर्म समभाव जगे, कुछ ऐसी बात बनानी है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख जो भी हैं, वह पहले हिन्दुस्तानी हैं।।

समता, ममता, सौहार्द, अतिथि–सेवा अपनी परिपाटी है,
सद्भाव, अहिंसा, सत्य, प्रेम, सुख–शान्ति हमारी थाती है।
भारत माता की रक्षा हित बच्चा–बच्चा बलिदानी है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख जो भी हैं वह पहले हिन्दुस्तानी हैं।।

राम, रहीम, रब, वाहे गुरु, बस सम्बोधन का अन्तर है,
कर्ता, भर्ता, हर्ता जग का, वह परम सत्य शिव सुंदर है,
हम आपस में न लड़ें, झगड़ें, यह दुनिया आनी जानी है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख जो भी हैं वह पहले हिन्दुस्तानी हैं।।

M,- vkuUn dqekj f=ikBh
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी नालंदा, राजगीर

23
मैं कल भी सुन्दर थी, आज भी सुन्दर हूँ

मैं तब भी सुन्दर थी
जब दूध पीते हुए मुँह से गिर जाता था
कोई साफ़ ना करता था तो मुहँ गंदा
ही रह जाता था

मैं तब भी सुन्दर थी
जब खुद से खाना खाते मुँह में कम
चेहरे पर ज़्यादा जाता था

मैं तब भी सुन्दर थी
जब घुटने पर घिसटते चलते खेलते
सारा शरीर गंदा हो जाता था

मैं तब भी सुन्दर थी
जब बड़े होते हुए बड़ों की तरह दिखने में
बेढंगा मेक–अप हो जाता था

मैं तब भी सुन्दर थी
जब पढ़ते–पढ़ते अपना होश नही रह
जाता था
खाना, पीना और सोना मन को नही
भाता था

मैं तब भी सुन्दर थी
जब सबके सपने चुनते बुनते
अपने सपनों को बिन देखे ही छोड़ दिया

मैं तब भी सुन्दर थी
जब तुम सुन्दर हो ही नहीं सुनते–सुनते
ये सबसे सुनना छोड़ दिया

मैं तब भी सुन्दर थी
जब नए जीवन के सपने और
ज़िम्मेदारी में
कर्तव्यों को चुन सजना संवरना छोड़
दिया

मैं तब भी सुन्दर थी
जब बच्चों के बाल बनाते–बनाते
अपने बालों को उलझा छोड़ दिया

मैं तब भी सुन्दर थी और अब भी और
हमेशा रहूँगी

क्योंकि सुन्दरता एक एहसास है
जो मुझ में होनी चाहिए
सुन्दरता आत्मविश्वास है
जो मुझ में होनी चाहिए
सुन्दरता तन के साथ मन की है
जो मुझ में होनी चाहिए
सुन्दरता ज़िम्मेदारी का एहसास है
जो मुझ में होनी चाहिए

जो मुझ में होनी चाहिए
वो मुझ में है
इसलिए मैं कल भी सुन्दर थी
आज भी सुन्दर हूँ।

lxhrk tnh
प्राचार्या
केंद्रीय विद्यालय नं. 4 दिल्ली छावनी

24
दीवार

दीवारें
जहां बनाती हैं घर
वहीं बना देती हैं
अपना पराया भी
जो रखती हैं
बाहर वालों को बाहर
अंदर वालों को अंदर
कोई भी
नहीं पार कर पाता दीवारें
इस लिए
दीवारों में
बनाये जाते हैं दरवाजे।
इन दरवाजों का खुलना या बंद होना
सब होता है
मकानों की सुविधानुसार।
और
हो सबका निर्बाध आना जाना
तो
बनना होगा बवंडर।

noUæ d|ekj
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 5 जयपुर

25
दीया और बाती

दीपावली पर
अमावस की अंधेरी रात में
अंधकार से लड़ते दीप के
बाती ने तेल से कहा–
'मैं जलकर रोशनी देती हूँ,
ये उजियारा है मुझसे,
महत्व अधिक है मेरा तुमसे,
हूँ नहीं मैं साधारण
तुम्हारी तरह।'
तेल ने दिया उत्तर–
"बिना मेरे क्या हो तुम?
जल नहीं पाओगे
भीगे मुझमें
पड़े ही रह जाओगे,
बिना पूछ परख के
सड़ गल जाओगे।"
हस्तक्षेप कर कहा दीये ने–
'अकेले नहीं हो कुछ
तुम दोनों,
या अकेले मैं स्वयं,
मिलकर होते हैं संपूर्ण तीनों हम,
मुझमें रखे जाकर ही
बन पाते हो दोनों तुम
प्रकाश का एक अंश,
हम मिलकर ही रहें।'

euh"k dekj xIrk
स्नातकोत्तर शिक्षक (सी.एस.)
केंद्रीय विद्यालय राजनांदगांव

26
हे! मनुष्य

हे! मनुष्य बोलो कब समझोगे तुम
तुम्हारा ये अहंकार, तुम्हारा ये कपटी स्वभाव
बोलो कब छोड़ोगे तुम।
हे! मनुष्य बोलो कब समझोगे तुम।
जहाज में उड़ने वाले, आज साइकिल की खोज में
गाँवों को छोड़ने वाले, आज वापस तुम राहों में
जिनको ले के चले तुम थे रहने अकेले
आज उनसे भी तुम हो गए हो अकेले।
हे! मनुष्य बोलो कब समझोगे तुम।
जो पास हैं उनसे, हाथ नहीं मिला पा रहे हो
जो दूर हैं उनके, पास भी नहीं जा पा रहे हो
जिनके साथ समय बिताने की हमेशा इच्छा थी तुम्हारी।
आज उनसे ही तुम बोर हो रहे हो।
मुँह पे हजारों खर्चा करने वालों, आज मुँह दिखाने से ही बच रहे हो
महलों पे महल जोड़ने वाले, आज एक कमरे में बंद हो रहे हो
अनजान खुशी की संधान में चल पड़े थे तुम,
आज फिर अपने आपको घर में, क्यों बाँध रखे हो तुम?
हे! मनुष्य बोलो कब समझोगे तुम।
आये हो अकेले, अकेले ही जाओगे
फिर तुम्हारा इतना परायापन,
मेरी समझ में नहीं आ रहा है
हे! मानुष बोलो कब समझोगे तुम।

l;dkr un
पीजीटी (गणित)
केंद्रीय विद्यालय क्र. 5 कलिंगनगर

27
विश्वास

अगर मंजिल की कुछ खबर न हो
और रास्ते भी आते नजर न हों
तो मन में अटल विश्वास रख
चल छोटे कदम, पर ठहर नहीं

साथ कोई हो न हो
पास कोई हो न हो
रुकना नहीं थमना नहीं
कुछ दूर आगे बढ़ सही

उलझनें सुलझेंगी सभी
गुत्थियां खुल जाएंगी
मुश्किलें आसान होंगी
एक कोशिश तो कर सही

कइ बार गिर, न उदास हो
उठने का मगर प्रयास कर
एक शक्ति है विश्वास में
इच्छा प्रबल तो कर सही

न बैठ हार मान कर
खुद को अकेला जानकर
ले आशा द्वीप हाथों में
कुछ दूर तो निकल सही

रास्ते भी दिख जाएंगे
मंजिल भी मिल ही जाएगी
तू हौसला ना हारना
पग–पग संभल के धर सही

खुद में अटल विश्वास रख
चल छोटे कदम, पर ठहर नहीं।

dYiuk oek
पी.जी.टी. (रसायन विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय एन.ए.एल. कैम्पस बैंगलोर

28
हम कहाँ जा रहे हैं

न घर का पता है मालूम और न मंजिल का कोई ठिकाना,
बिना मकसद ही जिन्दगी को ढोते जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर कि हम कहाँ जा रहे हैं?

निरर्थक और सार्थक की समीक्षा का भी वक्त नहीं,
अहंकार में हैं इस कदर डूबे कि स्वयं का भी होश नहीं,
सरल सी जिन्दगी को उलझनों में पिरोते जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर कि हम कहाँ जा रहे हैं?

इसने ये कहा, उसने वो कहा, में उलझे हुए हम
इन्हीं व्यर्थ के संवादों में फँसकर रह गए हैं हम
जीवन की सार्थकता से परे बस साँसें लिए जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर कि हम कहाँ जा रहे हैं?

हमने इस धरा के लिए क्या है चुना, तनिक ये सोचो,
युद्ध, हिंसा, संघर्ष से किसका होगा भला, अंतर्मन में देखो,
स्वयं अपने ही विनाश का सामान सँजोये जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर कि हम कहाँ जा रहे हैं?

जीवन का एक बड़ा हिस्सा हमने निरर्थक में लगा दिया,
पर निंदा बुराई आदि में शक्तिशाली मन को उलझा दिया,
कैसे हो सिर्फ अपना ही भला, इसी सोच में बस जिए जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर की हम कहाँ जा रहे हैं?

हम आये किस लिए धरा पर, ये कभी न सोचा,
परोपकार तो दूर, निर्बलों की ओर कभी पलट कर न देखा,
है असीम संभावनायें शुभ कर्मों की जगत में लेकिन,

अपनी ही धुन में सभी अज्ञात दिशा में भागे जा रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर की हम कहाँ जा रहे हैं?

जीवन को नैसर्गिक रूप में ही रहने दो,
मानवता को सहज तरह से पनपने दो,
प्रकृति और मानव संबंधों में हो मधुरता,
समस्त मानव जाति को चैन से रहने दो
यही बात सदियों से पूर्वज समझाते आ रहे हैं,
क्या किसी को है कुछ खबर कि हम कहाँ जा रहे हैं?

jru d|ekj
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 कैंट, शाहजहांपुर

29
जो मैं न रहूँ

जो मैं न रहूँ
मुझे दफना देना धरती की गोद में–
गहराई में, अशेष गहराई में।
कि जहाँ, जिंदगी में घुटन का आभास न हो,
जहाँ अपनों के बीच परायेपन का एहसास न हो,
जहाँ अमर्ष रूपी सर्प विषवर्षा न कर सकें,
जहाँ रत्न चिंतामणि की होड़ न हो,
जहाँ मानव मानव के लिए महज बिसात का मोहरा न हो,
जहाँ हिंसा का तांडव न होकर, शान्ति का लास्य हो,
जहाँ कराहों सिसकियों की ध्वनि न गूंजें,
जहाँ अमन की बंसी का मधुर गान सुनाई पड़े,
जहाँ मासूमियत अब भी बरकरार हो,
जहाँ आंखों में न भय हो, और न ही दर्द के आँसू दिखें,
जहाँ महत्वाकांक्षाएँ व मिथ्याभिमान रिश्तों से ऊँचे न हों,
जहाँ अहन्ता अमेय ब्रह्म में लीन हो जाएँ,
जहाँ सिर्फ परब्रह्म के ज्ञान की रोशनी हो,
जहाँ मन में नित्य ही सन्तोष की मिठास हो,
जहाँ आत्मा परमात्मा के आगोश में समा जाएँ,
जहाँ मैं, मैं न रहूँ।
मुझे जीवन की हलचल से,
संसार की उलझनों से,
रिश्तों की जकड़न से दूर–
उस असीम गहराई में गाड़ देना
कि जहाँ मैं शान्त निद्रा पा सकूं।

ih lfp=k
स्नातक शिक्षिका (जीवविज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय कंजिकोड

30
जीवन–सरिता

रोको मत,
बहने दो नदी को,
अपनी संपूर्ण इच्छाशक्ति के साथ।
कल–कल, छल–छल, अविरल
लहरें उठेंगीं, गिरेंगीं
भावनाएँ हैं, बहेंगीं
किन्तु तुम
तुम चट्टान बनने की कोशिश मत करना
क्योंकि नदी है यह,
प्रकृति का चैतन्य स्वरूप
बाधा बने तो,
वजूद खो दोगे तुम अपना
नदी तो नदी है,
निकल जाएगी तुमसे टकराकर
आगे और आगे अपना विस्तार करती,
अपने गंतव्य सागर की ओर।
पथ में आए सभी जड़–चेतन को
जीवन–अमृत का पान कराती
यह सदासलिला
अपने अंतिम पड़ाव पर सुस्त हो जाए शायद
पर उससे जुड़े दो किनारे
उसके विस्तृत होने के प्रमाण होंगे
और आत्मतुष्टि से भरी वह तटिनी
विलीन हो जायेगी
उस अनन्त सागर में।

jf'e f}onh
टी.जी.टी. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 रायपुर

31
वर्तमान परिस्थिति

मानव से मानव आज आहत
है मिट्टी से मिट्टी मर्माहत
आज रंग–रंग से भीषण रंज है
हर रंगभूमि में मानवता आहत।।1।।

सबका आज घबराया मन है
व्याकुल जन और भयभीत तन है
आज कुंठित काया बगिया मुरझाई
हर चंद्रमुखी चंचल तरुणाई।।2।।

आज मानव मूल्य मलीन हुआ है
कुत्सित जन कुलीन हुआ है
सदाचारी हर आज अस्त हुए हैं
दुराचारी आज सब मस्त हुए हैं।।3।।

किसी के दामन में हैं लपटें
किसी के दिल में घोर चित्कार
किसी के द्वार–आंगन में लेटी
आज फांसी चूमे बहू और बेटी।।4।।

कब तक मानव मौन रहेगा
बेबस और बेचैन मरेगा
अब नहीं चलेगा कोई बहाना
प्रण लेना होगा पत्थर से
टकराना।।5।।

गीता सार तुम पढ़े हुए हो
रणक्षेत्र में खड़े हुए हो
नहीं बनो तुम कायर वीर
चलो उठाओ तरकश तीर।।6।।

भय का बादल चीर तुम डालो
अमन चैन का बीज तुम डालो
डालो जन–जन में निर्मल विश्वास
तभी मानव प्राणी में खास।।7।।

lgtkuUn dqekj
टीजीटी (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय टाटानगर

32
सृष्टि संरक्षण–सबका रक्षण

प्रकृति हो गई कुपित आज संकट में विश्व खड़ा सारा।
उपवन जैसी वसुधा को हमने शमशान बना डाला।।

आधुनिकता की चकाचौंध में हम सब क्यों यह भूल गए।
गगन चूमने के चक्कर में धरती पर ना पाँव रहे।
नहीं मालिक मेहमाँ हैं हम सब, इसको हमने भुला डाला।।
उपवन जैसी वसुधा को हमने शमशान बना डाला।।

सब जीवों में श्रेष्ठ बना नर को भेजा इस धरती पर।
पालन पोषण रक्षण का दे भार मनुज के कन्धों पर।
लालच हेतु त्रास में जीवन पशु–पक्षी सबका डाला।।
उपवन जैसी वसुधा को हमने शमशान बना डाला।।

जागो अभी समय है वरना फिर रहना होगा हाथ मले।
'सृष्टि संरक्षण–सबका रक्षण' यह संकल्प सभी हम लें।
दूर करेंगे संकट अब ये जो हम सब ने मिलकर पाला।।
उपवन जैसी वसुधा को हमने शमशान बना डाला।।

M,- çekn dqekj 'kekZ
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय टोंक

33
राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा बने हिंदी

हिंदी हमारी आन–बान–शान है,
हिंदी हमारी आत्मा का गान है।

राष्ट्र की बिंदी के रूप में इसकी पहचान है,
हिंदी हमारे राष्ट्र का स्वाभिमान है।

खुसरो से शुरू हुआ जयगान है,
साहित्य में रासो का भी स्थान है।

कबीर व जायसी का अवदान है,
सूर–तुलसी जैसे कवि वरदान हैं।

भक्तिन मीरा तो कहीं रसखान है,
रीतिबद्ध, सिद्ध, मुक्त का बखान है।

हिंदी हमारी आन–बान–शान है,
हिंदी हमारी आत्मा का गान है।

हिंदी की निरंतर ऊँची उड़ान है,
भारतेंदु युग में भी गति अविराम है।

छाया, प्रगति, प्रयोगवाद भी महान है,
इसके आगे का दौर भी अभिराम है

हिंदी चेहरे पर लाती मुस्कान है,
सब भाषा–भाषियों की यह जान है।

अभी तो पाई जमीं सामने आसमान है,
इसको राष्ट्रभाषा बनाने का अरमान है।

हिंदी हमारी आन–बान–शान है,
हिंदी हमारी आत्मा का गान है।

जन–जन तक पहुंचाना पैगाम है,
हिंदी की खुशबू में हिंदुस्तान है।

वैज्ञानिक भाषा होने के पुष्ट प्रमाण हैं,
इसके व्याकरण के आगे शर्माता विज्ञान है।

इस भाषा में वर्षों का अनुसन्धान है,
इसके विदेशों में भी कद्रदान हैं।

इसको विश्वभाषा बनाने का अभियान है,
सब देशवासियों के इसमें बसते प्राण हैं।

हिंदी हमारी आन–बान–शान है,
हिंदी हमारी आत्मा का गान है।

fnyhi dqekj 'kekZ
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, अजमेर

34
फुटपाथ के बच्चे

टूटा–फूटा भी कोई खिलौना नहीं।
गीला–गीला है, सूखा बिछौना नहीं।

खाली है पेट, गालों पे आँसू सूखे,
भाग अपना कहीं से सलोना नहीं।

यूँ ही फुटपाथ पे दर–बदर रह गये,
अपना हो जो कहीं कोई कोना नहीं।

मुस्कुराना है तो मुस्कुरा लेते हैं,
गम हो कुछ भी, बहुत देर रोना नहीं।

चाँद–तारों तक अपनी जागीरें कर लीं,
टुकड़ा धरती का अपना तो होना नहीं।

आज के लम्हों का जब ठिकाना नहीं,
कल के सूरज से रिश्ता सँजोना नहीं।

अपनी मुट्ठी ही हमको भरी चाहिए,
हमको 'आवारा' चाँदी या सोना नहीं।

egUæ dqekj ek;k
पीजीटी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय हाफलोंग

35
हमने रिश्तों को मरते देखा है!

हमने रिश्तों को मरते देखा है,
बाप बेटे का दुश्मन,
भाई बहन का प्यार दुश्मनी में बदलते देखा है,
हो जाते हैं रिश्ते जहाँ तार–तार,
हमने मंजर ऐसा भी देखा है,
हमने रिश्तों को...

जब तक बाप जवान था,
बेटे को कंधे पर झूलते देखा है,
हँसी ठिठोली साथ करते,
बेटे की हर जिद पूरी करते देखा है
जब बाप हो गया बूढ़ा तब,
बाप को रोते देखा है,
जिस घर को बनाया था बड़े चाव से,
आधी रात में उसी घर से निकलते देखा है,
हमने रिश्तों को...

जन्म दिया जिस दात्री ने,
उसको भी रोते देखा है,
जिसने अपना निवाला छोड़,
पुत्र के मुँह में डाला,
उसी की थाली को ठोकर लगते देखा है,
जो तड़फ पड़ती जरा चोट से,
तेरे लिए उसे घबराते तड़फते देखा है,
आज उसी को तड़फाते भी देखा है,
चुपके–चुपके ही सही, आँसू बहाते देखा है,
जो था घरबार उसका, छोड़ उसे
वृद्धाश्रम में जाते देखा है,
हमने भी रिश्तों को...

भाई बहन को संग हँसते खेलते देखा है,
बड़े दुलार से ब्याही गई,
ससुराल भेजते भाई को भी देखा है,
पता नहीं कब, क्या हो गया,
संपत्ति के लिए लड़ते मरते देखा है,
नहीं आती अब वो पीहर,
हमने गाँव छोड़ते देखा है,
हमने रिश्तो को...

भाई–भाई में प्रेम बहुत था,
संग एक थाली में खाते देखा है,
लड़ जाते थे किसी से भी,
हमने भाई ऐसा भी देखा है,
पता नहीं कब क्या हो गया,
एक दूसरे का सिर फोड़ते देखा है,
जो करते थे बहुत प्रेम,
उसे गोली से भूनते देखा है,
हमने रिश्तों को...

प्रेम बहुत था पति–पत्नी में,
हमने उनको भी लड़ते देखा है,
जो साथ जीने–मरने की कसमें खाते,
हमने उनमें भी दगा देखा है,
पर पुरुष, प्रोपर्टी के लिए,
हत्या पति की करते देखा है,
हमने रिश्तों को...

eg'k dqekj eh.kk
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय कर्नूल

36
जीवन की सच्चाई

जीवन उतना गंभीर नहीं है जितना,
हमारा दिमाग सोच सोच कर बना देता है।
जीवन में जरूरी नहीं कि,
हम सबसे अच्छे बने रहें।
केवल यह जरूरी है की
हम सर्वदा प्रयास करें।
भरोसा रखें की हमारा जीवन शानदार है,
और यही भरोसा इसे हकीकत बना देगा।
सिर्फ चाहने से कुछ नहीं होता,
कर्म करना जरूरी है।
यही सुखी जीवन की एकमात्र, सर्वश्रेष्ठ पूंजी है।
सर्वदा अच्छे कर्म करते रहें
यही जीवन की सच्चाई है।

ehjk e|erkt cxe
टीजीटी (सामाजिक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय नं. 2 उप्पल

37
शिक्षक-प्रजागरण

तुम अगर नहीं चेते देश बढ़ न पायेगा
जाति वर्ग भाषा में देश बँट ये जाएगा
बात एकता की है व्यक्ति–व्यक्ति अनुपम है
जाति वर्ग भाषा से देश ही महत्तम है।

भोगवादिता की आग लालची बनाती है
हर वो चीज पाने को रोज ये सताती है
त्यागभावना पर आज मूर्खता पहरा है
भारतीय संस्कृति पर घाव हुआ गहरा है
इन ज्वलन्त प्रश्नों का हल नहीं सरलतम है
जाति वर्ग भाषा से देश ही महत्तम है।

सौम्यता सरलता पर छल कपट की छाया है
बंधुता के रिश्तों पर हावी ठगनी माया है
उंगलियाँ बताती हैं फोन पर ही मेला है
चार मित्र बैठे हों तो भी जन अकेला है
जीवनीय शैली में क्यों हुआ व्यतिक्रम है
जाति वर्ग भाषा से देश ही महत्तम है।

वासना की नजरों ने हर सुता को घेरा है
निष्कलंक चेहरों के पीछे तम घनेरा है
सिसकियाँ बतातीं हैं कुछ न कुछ तो गंदा है
मनुज भय विवशता से लाश सा ही जिंदा है
नागरिक सुसंस्कृत हों तो सफल परिश्रम है
जाति वर्ग भाषा से देश ही महत्तम है।

uouhr d|ekj
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, वायुसेना अकादमी डुंडीगल

38
पिघलते बादलों के बरसने का इंतजार है मुझे

पिघलते बादलों के बरसने का इंतजार है मुझे
भीगती बयार का इंतजार है मुझे
सजाये हैं प्रकृति से, आलिंगन के सपने मैंने
बादलों के बरसने का, इंतजार है मुझे
भीगूंगा मैं और भीगेगा, मन का हर एक कोना
झर–झर करते झरनों का, इंतजार है मुझे
प्रकृति के नजारों से कर लूंगा, भाव विभोर खुद को
पुष्पों के खिलने और संवरने का, इंतजार है मुझे
खुद को पावन करने की, आस लिए जी रहा हूँ मैं
पावन सलिला के कल–कल करने का, इंतजार है मुझे
प्रकृति के मनोरम दृश्यों से स्वयं को पोषित करने की, चाह लिए दिल में
वसंत के आगमन का, इंतजार है मुझे
जीवन को पूर्णतः जीने की आस में जी रहा हूँ मैं
एक खुशनुमा सुबह का, इंतजार है मुझे
मेरी जिन्दगी कुदरत की, नायाब कलाकृति हो जाए
जिन्दगी के जीवन के सत्य से गुजरने का, इंतजार है मुझे
पिघलते बादलों के बरसने का इंतजार है मुझे
भीगती बयार का इंतजार है मुझे
सजाये हैं प्रकृति से, आलिंगन के सपने मैंने
बादलों के बरसने का, इंतजार है मुझे।

vfuy dqekj xIrk
पुस्तकालय अध्यक्ष
केंद्रीय विद्यालय 14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र सुबाथु

39
कहाँ तक?

तितलियाँ कांटेदार फूलों से कहाँ तक भागेंगी,
किरणें बादलों से क्या कभी नहीं टकराईं !
मेघ क्या मन की तपिश के बाद ही बरसते हैं !
पतंगों की उड़ानें कब क्षितिज को खोज पाईं।

मायावी मन भटक रहा शहर–शहर में,
जो देखते–देखते अंधियारा हो चला है।
भाग कर जाए तो कहाँ तक जाए,
रूठी धरा ने सर्वत्र बत्ती गुल किया हुआ है।

उम्मीद के जनाजे को देकर भी काँधा,
हौसलों को इश्तियाक है शबनम–ए–सुबह का।
कहाँ तलक डरायेगा ये मंजर पंछियों को!
उड़ने का हुनर ढूँढ ही लेगा, पता मुक्त गगन का।

M,- lhek ç/kku
प्रचार्या
केन्द्रीय विद्यालय, आरा

40
दौड़ लगाओ पूरे जोश से

दौड़ लगाओ पूरे जोश से, बहुत बड़ा मैदान है
जिसका जितना गिरा पसीना, उतना ही सम्मान है

भारत पर अभिमान करो और, आजादी से प्यार करो
सत्य को तुम भगवान बनाओ, और किसी से नहीं डरो
कर्म सदा ही पहले होता, ये गीता का ज्ञान है
जिसका जितना गिरा पसीना, उतना ही सम्मान है

शिक्षा को हथियार बना लो, पर धड़कन में दया बसे
बढ़ जाओ हो भले अकेले, जग सारा ये भले हंसे
एक ही है 'वो ऊपर वाला', हम जिसकी संतान हैं
जिसका जितना गिरा पसीना, उतना ही सम्मान है

गांधी को जो समझना चाहो, कुछ दिन बनकर देखो तुम
वीर भगतसिंह समझना चाहो, कुछ दिन बनकर देखो तुम
जीते जी जो मरे देश पर, बस उसकी पहचान है
जिसका जितना गिरा पसीना, उतना ही सम्मान है

l|t ; d|ekj t|u
सहायक अनुभाग अधिकारी
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

41
क्षुधा से सिद्धि

अर्पण तर्पण हो या जप तप व्रत हवन शुचि यज्ञ अम्बक में,
वांछित वस्तु विधान हो या फिर अखिलेश्वर अवलम्बन में,
हो कर्म स्यंदन कर में या मंजुल विजय मृदंग पग में,
मुखरित मधुवन जीवन हो या मरणोत्तर गुंजित गायन जग में।

रही तृप्ति मौन सर्वदा, पर लिए श्वास उर में, स्वर दृढ़ कंठ राग में,
क्षुधा ही सृजन शाश्वत ला पायी, अविचल वसुधा पर युग–युग में,
रही तृप्ति क्लांत विश्रांत सर्वदा पर, पंथ कर प्रशस्त पुण्य जगत में
क्षुधा ही ला पायी, परिवर्तन प्रबल सिद्धि समुज्ज्वल जीवन में।

भाव लिए पावन पग–पग में करें सृजन हम नव युग जग में
भारत भाल रहे उर्ध्वंग महि जन तप क्षण हर दिग दिगंत भूतल अम्बर में,
धर्म यही धारित ध्येय यही लक्ष्य यही लक्षित उद्देश्य यही मन में,
हिन्द ध्वज दंड रहे उतुंग स्वर्णिल मणि मार्तंड दीपित आभित नभ में।

भामा–पन्ना का त्याग अमर लिए
ध्रुव प्रहलाद नचि का भाव प्रवण मन में,
कपिल कणाद गौतम का साध नवल लिए
भट्ट कुमारिल शंकर मन्यू का पुरुषार्थ प्रबल मन में,

उर्मी यशो का धरा विछोह गहन लिए,
रवि मीरा की निश्छल भक्ति पुनीत मन में,
चन्द्र हरीश बलि दधीचि का दान अमित असीम लिए,
लिए विनय, बल बुद्धि विवेक तन मन हिय जीवन में।

जगे क्षुधा जीवन में हो झंकृत आशा, अभिलाषा तन–मन में,
पुरुषार्थ प्रबल की प्रेम प्रसिद्धि की,
ज्ञान समृद्धि की युक्ति मुक्ति की,
ज्ञानार्जन मुमुक्षु हरिदर्शन की।

जगे यह भूख, क्षुधा सृजन की
स्वस्थ सुखी सबल सफल जीवन की मन में।

çdk'k pUæ rkoMh
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 तेजपुर

42
नव प्रभात

नव प्रभात सा नव जीवन,
नव किसलय नव कुसुमों पर।
नव सूरज की रश्मि रथी,
नव बेला की पंखुड़ियों पर।।
विहगा चहके चहुँ दिशाएं,
कोयल कूजे डाली–डाली पर।
पपीहे की तो मीठी तान रे,
पक्षी का कलरव धरती पर।।
निशा पति अपने किरण समेटे,
चला जा रहा दूर क्षितिज पर।
पुरवाई है अंग लपेटे,
न्योछावर हो गई सृष्टि धरा पर।।
भोर मनोहर सुबह सुहानी,
खुशबू फैले अंबर पर।
हरियाली की चूनर ओढ़े,
यौवन छलका प्रकृति पर।।
उठो देश के वीर सपूतों,
नाज हमें भी होगा तुम पर।
आलस्य प्रमाद का समय नहीं है,
यश फैले संपूर्ण जगत पर।।

iue 'kDyk
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

43
मजबूर चिड़िया

घोंसले से चिड़िया उड़ न सकी क्योंकि,
उड़ान से पहले ही राक्षसी पक्षियों ने हिम्मत तोड़ दी।
शुरू में उड़ने का सोच रही थी चिड़िया की बच्ची,
तो रूढ़िवादियों ने कहा अभी तेरी उम्र है कच्ची।
जब घर से ठान कर निकली कोमल कली,
तो झुण्ड ने भरी आवाज में कहा हो गई क्या बावली।
खाली दिमाग को भरने गई जब वह चिड़ियाघर,
तो जंगली भेड़िये देख रहे थे ताक–ताककर।
नादानी में किये जा रहे थे जब हाथ पीले,
तो कमजोर पड़ने लगे उड़ने के हौंसले।
अब दिनभर करती है दाना–पानी की जुगत,
बचपन की ही पीड़ा को रही है भुगत।
जब हजारों रोगों ने उनको जकड़ लिया,
तब ससुराल वालों ने भी मुँह मोड़ लिया।
अब थी श्वास नली भी टूट चुकी,
इसलिए घोंसले से वह उड़ न सकी।

lkgu yky
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी, बेलगाँव

44
आह्वान !

कर पूरब की क्षितिज को लोहित
सूरज से प्रेरित होकर चल
भटकने का नहीं, समय है मानव
स्वंय को ले पहचान, और चल!

चारों ओर है गहन तम,
निर्वाक मानव है हो रहा,
तू स्वयं बन प्रेरणा खुद की
हौसलों से उर्जा लेकर चल!

माना कठिन है चढ़ाई
है राह में भरे हुए फिसलन
पर मार्ग से डिगाने को तुझे
हो जाए सब बाधा विफल,

हर बाधा को हँस कर हटा
अपनी बेड़ियों को दे तू तोड़!

पंख फैला, ले दृढ़ संकल्प,
उन्मुक्त विहंग बन कर चल!
है बूँद–बूँद से सागर बनता,
तू उसपर सपनों को लहरा
हो मुक्त छन्द, तेरे सपनों की
तू गीत मुक्ति का बनकर चल!

है झंझावात से पूर्ण यह भव
नीड़ तेरा न बसने देगा
बाहु पर तू रख भरोसा
तिनका उर में समेटकर चल!

भटकने का नहीं, समय है मानव
स्वंय को ले पहचान, और चल!
हो मुक्त छन्द, तेरे सपनों की
तू गीत मुक्ति का बनकर चल!

l|tkrk pkfd;k
प्रक्षिशित स्नातकोत्तर शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय शिवरामपल्ली

45
सुलगती धरा

दिल में कसक सी उठ रही
हलचल सी है मस्तिष्क पटल पर

क्यूँ वृक्षों को काटा हमने
जल स्त्रोतों को किया बर्बाद
धरती माँ यूं धधक रही
कैसे होंगे अब हम आबाद।

जनसँख्या वृद्धि, औद्योगीकरण
प्लास्टिक, पॉलिथीन और रसायन।
हम ही हैं दानव, विनाशकारी
बिगाड़ दिया प्रकृति का संतुलन।

अपशिष्ट, करकट और पॉलिथीन
कर रहे पर्यावरण को बीमार।
भू, जल, नभ, जीव जन्तु और पादप
इन सभी में हो रहे विकार।
आओ अब तो जागो मित्रों
कर लो मन में यह प्रण

अब इस धरती व नीर को
हम सब मिलकर बचाएंगे।
इस भू माता के बंजर तन को
वृक्षों से हम सजाएँगे
आने वाली पीढ़ी को हम
पर्यावरण सरंक्षण का पाठ पढ़ाएंगे।
इस धरा को हरा–भरा कर
भविष्य, सुरक्षित बनाएँगे।

lxhrk ,e- pkgku
पीजीटी (संगणक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय क्र. 3 ग्वालियर

46
स्वर्णिम दीपक जलते रहना

मेरी आशाओं के स्वर्णिम दीपक।
तुम प्रतिपल कोरोना काल में भी जलते रहना।।
गली–गली चौराहों में
घर–आँगन चार दीवारों में।
महलों में ऊँचे परकोटों पर
झोंपडी के कच्चे आँगन में।
मेरी आशाओं के उज्ज्वल दीपक
तुम हर अँधियारा पीकर जलते रहना।।
निर्धन की आखों की ज्योति में,
तुलसी के महकते चौबारे में,
ममता की सुख भरी झोली में,
भाई के माथे की रोली में,
मेरी आशाओं के स्वर्णिम दीपक
तुम सर्वदा प्रज्ज्वलित रहना।।
वीरों के उन्नत भाल पर
वीर सपूतों की मजार पर
दुर्गम, कठिन, कंटीले रास्तों पर
देश की सीमा के अंतिम बिंदु पर
मेरी आशाओं के स्वर्णिम दीपक
तुम सजग प्रहरी बन जलते रहना।

Lo.k yrk 'ke
टीजीटी (गणित)
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रपति परिसर

47
जिन्दा है, मेरा शहर!

जिन्दा है, मेरा शहर,
अभी रुका है, फिर चल देगा!
इस दौर को,
एक नई, पहल देगा,
जिन्दा है, मेरा शहर,
अभी रुका है, फिर चल देगा!

अंधेरों की ताजपोशी,
झेली है, मीलों तक,
माटी नहीं है, मेहंदी है,
उदासी ठेली है, नदियों तक–झीलों तक,
यह कुंदन है, खरा सोना है,
अपनी पहचान फिर, असल देगा,
जिन्दा है, मेरा शहर,
अभी रुका है, फिर चल देगा!

जहां–जहां तक नजर गयी,
समा लिया, सबको सीने में,
हर कतरा–हर लम्हा,
बना मोती, मन के नगीने में,
उज्ज्वल पल, एक और सबल देगा,
जिन्दा है, मेरा शहर,
अभी रुका है, फिर चल देगा!

vofu çdk'k JhokLro
स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय वाहन निर्माणी (प्रथम पाली) जबलपुर

48
अखंड भारत

मेरा सपना है अखंड भारत का,
धन–धान्य से सम्पन्न भारत का,
हों जिसकी जड़ें सांस्कृतिक मूल्यों से सींची,
न हो कोई भेद–भाव की रेखा उसमें खींची।
जब बढ़ेगा समाज में गुरु का मान,
होंगे माता–पिता परिवार की आन,
अच्छे संस्कारों की नींव बढ़ाए शान,
तभी बनेगा हमारा भारत महान।
भारत का कण–कण देता है जीवन का ज्ञान,
खड़ा हिमालय लेता है नैतिक मूल्यों का संज्ञान,
बहती नदियाँ जैसे अपना रास्ता खोज लेती हैं,
वैसे ही जीवन की समस्याएँ बुलंद हौसलों से हार मान लेती हैं।
मेरा भारत विश्व में सबसे निराला है,
यहाँ प्रेम–भाव का बोल–बाला है,
जहाँ की हवा भी सुनती है कहानी,
हर जगह की है ऐतिहासक प्रीत पुरानी।
समाज में आओ मिलकर लाएं नई क्रांति,
मिटे सब बुराई स्थापित हो विश्व–शांति,
सब के अंदर हो इंसानियत का वास,
मिटे ईर्ष्या–द्वेष और मन में पैदा हो एक–दूसरे के संग चलने का विश्वास।
आओ करें मिलकर निर्माण अखंड भारत का,
धन–धान्य से सम्पन्न भारत का।

Hkkouk xIrk
प्राथमिक शिक्षिका (प्रथम पाली)
केन्द्रीय विद्यालय एंड्रयूज गंज

49
मुश्किल भरे दौर

दौर कई रहे मुश्किलों भरे मेरे
लेकिन खुद को संभाल कर जीना सीख लिया मैंने।
गम को नजरअंदाज कर खुश रहना सीख लिया है मैंने।
हाँ कुछ बदल गई हूँ आज, मुझे खुद इसका अंदाजा है,
लेकिन ये वक्त और लोगों से ही मिला तकाज़ा है।
हिम्मत हारते–हारते खुद को हिम्मत दिलाया,
वक्त और लोगों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया।
कई बार टूट के बिखरी हूँ, लेकिन टूट के सँवरना सीख लिया मैंने।
सब के साथ मिलकर चलना सीख लिया मैंने।
हिम्मत ना कभी हारी, ना कभी हारूँगी,
हर मुसीबतों को मात देकर, आगे बढ़ना सीखूँगी।
दौर कई रहे मुश्किलों भरे मेरे,
लेकिन खुद को संभाल कर जीना सीख लिया मैंने।
खुश रहना सीख लिया मैंने।

'kcue Bkdj
पीजीटी (रसायनशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय चेनानी

50
विचारों का प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण बुरा तो है,
लील लेता है कानों को,
कर देता है बहरा,
मगर!
विचारों का प्रदूषण भूल जाता है मर्यादा,
छीन लेता है ज़िंदगी,
नहीं सुन पाता है चीख किसी की, अनंत काल तक हो जाता है बहरा।
बहन बेटी हो किसी भी धर्म की
तो विचारों का प्रदूषण भूलता है अपना धर्म भी,
और कर देता है तार तार

वायु प्रदूषण बुरा तो है,
कर देता है धुआं–धुआं शहर में, गांव में, सड़क पर
मगर!
विचारों का प्रदूषण नहीं देखता, कभी कोई उम्र किसी की
चीर देता है अंतर्मन
आत्मा तक कर देता है अंधेरा,

जल प्रदूषण बुरा तो है,
कर देता है बीमार,
भर देता है अस्पताल की चारपाइयां,
मगर!
विचारों का प्रदूषण पूछता है जाति,
जानना चाहता है हैसियत,

फिर अपनी ही आत्मा को बनाता है पत्थर की,
जो डूब जाती है किसी गहरे कुएं में,
मृदा प्रदूषण बुरा तो है,
खो देता है उर्वरता,
खेतों में भर देता है खालीपन,
मगर!
विचारों का प्रदूषण मन में रखता है जहरीली झाड़ियां,
छाती से लगाकर घोंपता है छुरा पीठ में,
और फिर मुस्कुराता है मन ही मन।

mek'kdj iokj
पीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय रघुनाथपुरा नारनौल

51
कविता के आयाम

मौन को शब्द में,
अरूप को रूप में
ढाल देती है कविता।
असंभव को यूँ,
निमेष में संभव कर देती,
कविता एक साधना भी है।

सत्य के जिस शोध के लिए,
योगी ताउम्र हठयोग करते,
ज्ञानी मौन साधते,
कविता पहुंच जाती
अनायास उस सत्य तक,
कविता एक आराधन भी है।

ढहा देती दीवारें,
हिला देती सरकारें,
समाज की छाती पर बैठ,
दबाते व्यर्थ परंपराओं के पाषाण,
कर देती चकनाचूर क्षण में,
कविता एक क्रांति भी है।

जिंदगी की समस्याओं
से डसे हुए इंसान,
या अपने कुछ हो जाने के दंभ में
फंसे हुए इंसान
को कर देती पुलकित,
भोर की ओस में भीगी घास की मानिंद
कविता एक विश्रांति भी है।

u= f l g
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र०1 बरौनी

52
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ

बच्चों के बीच रहता हूँ, जीवन का सार कहता हूँ,
आदर्श गीत गाता हूँ, ईश्वर भी उनमें पाता हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।1।
सम्मान सभी से पाया है, विपदाओं का भी साया है,
द्वेष नहीं मैं रखता हूँ, सृजन हरपल करता हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।2।
ईमान को बिकते देखा है, सच पर भी काली रेखा है,
फिर भी ईमान सिखाता हूँ, सच का ही पाठ पढ़ाता हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।3।
मरुधरा का वासी हूँ, वाचाल नहीं मितभाषी हूँ,
शिक्षा का मैं सारथि हूँ, संकट में महारथी हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।4।
रैन नहीं मैं भोर हूँ, मझधार नहीं मैं छोर हूँ,
हार में मैं जीत हूँ, बैर नहीं मैं प्रीत हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।5।
स्वप्न नहीं यथार्थ हूँ, स्वार्थ नहीं परमार्थ हूँ,
सफलता की आस हूँ, ज्ञान का प्रकाश हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।6।
निर्बल नहीं विनीत हूँ, रिपु नहीं मैं मीत हूँ,
अन्धकार में दीप हूँ, प्रज्ज्वलित कुलदीप हूँ।
क्योंकि मैं शिक्षक हूँ।7।

d|ynhi d|ekj
टीजीटी (अंग्रेजी)
केंद्रीय विद्यालय शाहदरा

53
बादलों के पार

बादल होते हैं ऊँचे
पहाड़ से भी
लेकिन इन्हें घमंड नहीं होता
अपनी ऊंचाई का,
इसीलिए
बादल नीचे उतरते हैं
पहाड़ों की चढ़ाई के रास्ते में,
पेड़ों के आसपास की
पहाड़ी बस्तियों में,
इतना नीचे
कि छूकर इन्हें
कर सकते हैं महसूस,
लगा सकते हैं गले,
इसलिए यह बरसते भी हैं
जमीन पर, लाते हैं बारिश
खुशियाँ और खुशहाली,
और वही बादल
जब उठते हैं
तो पहुँच जाते हैं
वायुयानों की ऊँचाई तक,
और इससे भी ऊपर
उस पार तक, जहाँ हैं बस,
चाँद और तारे बेशुमार,
जाना होता है जहाँ मुश्किल,
और पहुँचते हैं बस ख़्वाब वहां
इसीलिए पहुँचती हैं वहाँ केवल
कवियों की कल्पनाएँ और उपमाएँ
या अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा
जैसे।

M,- ;kxæ dqekj ikM;
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, राजनांदगाँव

54
आओ पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर हम सब भैया, ज्यादा पेड़ लगाएँ,
आस पास अपनी धरती को, फिर से हरा बंनाएँ।

मानव, तेरी गतिविधि से, आज पर्यावरण दूषित है,
जंगल का हर जीव जंतु, बेघर और तृषित है,
क्यों न इन जीवों को फिर से, इनका घर दिलवाएँ,
कितने उपयोगी तरु होते हैं, सबको ये समझाएँ,
आओ मिलकर हम सब भैया, ज्यादा पेड़ लगाएँ,
आस पास अपनी धरती को, फिर से हरा बनाएँ।।

एक पेड़ जो फल देता है, वही पेड़ दे छाया,
लकड़ी बनकर शोभा देती, इन तरुओं की काया,
बगिया के फूलों से अपनी, प्यारी धरा सजाएँ,
लुप्त होती गोरैया का, फिर से नीड़ बनाएँ,
आओ मिलकर हम सब भैया, ज्यादा पेड़ लगाएँ,
अपने आस पास धरती को, फिर से हरा बनाएँ।।

हो जाये हलकान कृषक, जब फसल सूख जाती है,
पानी बिन धरा पर सबको, रहती प्यास सताती है,
तब ये वन बादल लाते, जो निर्मल जल बरसाएँ,
रिमझिम बारिश की बूंदों से, सबके मन हरषाएँ,
आओ मिलकर हम सब भैया ज्यादा पेड़ लगाएँ,
आस पास अपनी धरती को फिर से हरा बनाएँ।।

vjfoUn dqekj
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–2 रुड़की

55
संकल्प

आओ मिलकर हम सभी आज संकल्प लें भारत माँ के श्रृंगार का।
कोई डगर नहीं मुश्किल जो मन में ठान लें,
आज श्रमदान करें मिलकर काम करें,
रहा न जल पीने योग्य स्वच्छ समीर न जीने योग्य,
धरा हो रही बंजर कैसा है यह मंजर? कैसा है ये मंजर?
कूड़ेदान बनी ये नदियाँ कुलषित हुई ये पुरवाई,
लुप्त हो रहे प्राणी लुप्त हो रहीं नदियाँ और वनस्पतियाँ,
तन मन बुद्धि तक हो गई कलुषित बालमन है कुंठित,
आओ, जो हाथ से निकल गया उसे हम न पा सकते,
जो है सम्मुख प्राप्य जाने न दें
आओ मिलकर हम सभी आज संकल्प लें भारत माँ के श्रृंगार का।

आज गाँव–गाँव, गली–गली करें स्वच्छ, समृद्ध, निर्मल,
समग्र वसुधा को "वसुधैव–कुटुम्बकम्" की अगरु से सुवासित करें,
दृग कोरकों से परखे अजेय विश्व–पटल को,
भारत–भारती, भरत–सम बनाए निस्पृह
उन्मुक्त नील–गगन से
चुग–चुग मुक्ता मोती ला जग को आज विस्मित करें,
जो कल था वह आज नहीं जो आज है वह कल नहीं,
नियति है यह जीवन की तो फिर क्यों देर करें ?
आओ मिलकर हम सभी आज संकल्प लें भारत माँ के श्रृंगार का।

हो न कभी अस्ताचलगामी, उदयाचल के भानु–सम,
क्षितिज को रश्मियुक्त करें स्वकर्म प्रभा बरसाकर,

विघ्न बाधाएं दूर कर दीप्ति व्याप्त कर उमंग प्रताप जला,
वसुंधरा को स्वर्ग बनाएं अविरल श्रम पुष्प वर्षा करें,
आत्माहुति देश हेतु देने सदैव स्वयं तत्पर रहें,
छोटे–छोटे कर्म खुद करके नव पथ प्रशस्त करें,
हम सबको मिलकर एक ऐसा कदम उठाना है,
हर बचपन, हर विद्यार्थी, हर मानव को भविष्य का कर्णधार बनाना है।
आओ मिलकर हम सभी आज संकल्प लें भारत माँ के श्रृंगार का।

t ;rh mik/;k;
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय बीएसएफ कैम्प छावला नई दिल्ली

56
आत्म विश्वास

दिन में सूरज है अगर,
तो रात में भी चाँद तारे हैं,
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं,
जो कभी हारे हैं।

कभी धूप कभी बारिश,
ये तो कुदरत के नजारे हैं,
पर प्यासे तो वे लोग भी हैं
जो समुद्र के किनारे हैं।

कुछ न कर सके तो कहते हैं,
हम तो किस्मत के सहारे हैं,
पर जान न सके तुम खुद को,
कि कितने रूप तुम्हारे हैं।

हिम्मत और हौसला हो अगर,
तो रास्ते कई सारे हैं
पर जीत तो वे लोग भी सकते हैं,
जो कभी हारे हैं।

जो लोग वक्त के साथ ढल नहीं सकते,
वे लोग अपनी किस्मत बदल नहीं सकते।
गिर जाते हैं राह पर पत्थरों की तरह
कौन कहता है कि वे लोग फिर चल नहीं सकते।

on çdk'k ehuk
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय सी.सु.ब. रायसिंह नगर

57
हम ऐसा किरदार बनें

धरे हाथ पे हाथ न बैठें, जीवन की रफ्तार बनें।
अंतिम क्षण तक हार न मानें, हम ऐसा किरदार बनें।।
जब–जब पर्वत बाधाओं के, हमसे आ टकराएँगे।
तब–तब झंडे गाड़ेंगे हम, गीत विजय के गाएँगे।।
केवि में कल–कल कलरव कर, विद्या हम सब पाएँगे।
संकल्पों को पूरा करने आगे बढ़ते जाएँगे।।
जीवन में रँग भरने वाले, हर फन के फनकार बनें।
अंतिम क्षण तक हार न मानें, हम ऐसा किरदार बनें।।1।।

कह दो मुँह पर उस आलस से रोक सके तो रोक हमें।
अपनी असफलताओं का अब नहीं मनाना शोक हमें।।
आगे बढ़ना आगे बढ़ना बस संकल्प हमारा है।
पढ़ते जाओ बढ़ते जाओ यही हमारा नारा है।।
हैं निराश जो उनकी खातिर, आशा का संचार बनें।
अंतिम क्षण तक हार न मानें, हम ऐसा किरदार बनें।।2।।

गिरे अगर हैं उठना सीखें, चोटों को सहना सीखें।
तोड़ें दुख की चट्टानों को, झरने सा बहना सीखें।।
नन्हीं चींटी हार न माने समझाएँ अपने दिल को।
गिरते उठते कोशिश करते पा जाती है मंजिल को।।
पार समंदर करने वाली खुद अपनी पतवार बनें।
अंतिम क्षण तक हार न मानें, हम ऐसा किरदार बनें।।3।।

आओ पछाड़ें अपनी सारी दुर्बलता को आज, अभी।
हुआ जो हुआ, छोड़ें पिछला, बदलें हम अंदाज अभी।।

आसमान पाताल तलक हम जा सकते आ सकते हैं।
जो भी ठाना है मेहनत से, लक्ष्य कठिन पा सकते हैं।।
गढ़ें कहानी अपनी आओ भारत का श्रृंगार बनें।
अंतिम क्षण तक हार न मानें, हम ऐसा किरदार बनें।।4।।

f=oUæ/kj cMx;k
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय इं.गां.रा.ज.वि.वि.परिसर अमरकंटक

58
भिखारी का स्वाभिमान

वाह! भिखारी भी क्या चीज है।
भीख मांगने की भी अपनी तहजीब है।
वैसे तो बहुत भिखारी देखें मैंने।
एक भिखारी से पड़ गए लेने देने।
एक दिन मैंने एक भिखारी को दयनीय अवस्था में देखा।
लेकिन देखने मे लग रहा था वह हट्टा कट्टा व बाहुबली जैसा।
भिखारी मेरे पास आया बोला –'बाबूजी कुछ दे दो'।
मैंने मन में सोचा–इस भिखारी को यहां से जाने दो।
मैने पहले कुछ ध्यान नहीं दिया।
लेकिन श्रीमती जी ने मुझे इशारा किया।
कुछ दे दो बेचारा भूखा होगा।
कुछ दिनों से न खाया–पिया होगा।
श्रीमती जी ने जो फरमान जारी किया।
मैंने तुरन्त अमल में लिया।
जब मैंने जीन्स की जेब में कुछ चिल्लर पाए।
तुरन्त 3–4 रुपये भिखारी के हाथ में थमाए।
भिखारी ये देख भरमाया व शरमाया।
बड़ी गंभीर वाणी में फरमाया।
बोला– ये आप ही रख लो मेरा स्टेटस इतना नहीं हैं।
मुझे भीख देने वालों की कमी नहीं हैं।
मैं भूखा मर जाऊंगा लेकिन इन चिल्लरों को न लूंगा।
अपने ईमान व पैसे को धोखा न दूंगा।
उसने मेरे हाथ चिल्लर थमाए और बोला।
आप को इनसे ज्यादा दे, हे! मेरे मौला।

मैं यह देख आश्चर्यचकित रह गया।
इतने में भिखारी आगे बढ़ गया।
मानो उसने विजय पताका फहरा दी हो।
मुझ जैसों को नानी याद दिला दी हो।
मैंने मन में सोचा–क्या जमाना आ गया।
आज का भिखारी भी क्या से क्या हो गया।
मैंने यह संकल्प लिया, अब किसी को भीख न दूंगा।
अगर देनी भी पड़ जाए, भिखारी का स्टेटस देख लूंगा।

ukgj flg eh.kk
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय कंजिकोड़

59
किसे दूँ मैं अपना ये सलाम

किसे दूँ मैं अपना ये सलाम
दूध बिलोती उन महिलाओं को
या फुटपाथों पर सोती अबलाओं को
या पटरियों पर मांग मिटाती उन बेसहाराओं को
वीरगति प्राप्त उन वीरांगनाओं को
मर कर भी अमर है जिनका नाम
उन्हें ही समर्पित हो मेरा ये सलाम .

किसे दूँ अपना ये सलाम
हवाओं को या फिजाओं को
या फिर चांदनी रात के
सिगूफे मल्लाहाओं को
जब दुनिया सोती है वह जगते हैं
पेट पूजा खातिर समुद्र पढ़ते हैं
मेहनत का बीड़ा, आराम पर लगाम
तुझे ही स्वीकार हो, मेरा ये सलाम

किसे दूँ मैं अपना ये सलाम
आंधी को या तूफानों को
या फिर भारत के नौजवानों को
जो हर राह पर नाम कमाते हैं
जो असंभव को संभव कर जाते हैं
जिसकी दुनिया के अच्छे हों आयाम
उन्हीं को अर्पित हो मेरा यह सलाम

किसे दूं मैं अपना ये सलाम
सीमा पर बैठे उस जवान को
या अन्न उगाते उस किसान को
ठंडी गर्मी का ना हो जिसे आभास
ना लगती है भूख ना लगती है प्यास
आराम जिसके लिए हो हराम
उसको ही स्वीकृत हो मेरा ये सलाम

je'k dekj
स्नातकोत्तर अध्यापक (गणित)
केंद्रीय विद्यालय बेंगडुबी

60
बेटी की पीड़ा

बेटी के पैदा होने पर कोई भी उत्सव नहीं हुआ
इतनी निष्ठुरता क्यों उसको स्नेहिल मन से भी ना छुआ
जो पोषक है इस श्रृष्टि की क्यों पुत्री रूप नहीं भाता
दादी–दादा, नानी–नाना सब कुंठित हैं, चिंतित भ्राता
जो वंश–बेल है मानव की वह इज्जत का प्रतिमान हुई
इसकी पलकें भी उठीं अगर समझो कुल की सब आन गई
देखो समाज में बहुतेरे जल्लाद अभी भी जिन्दा हैं
इनकी मानव–परिभाषा पर अपनी बेटी शर्मिंदा हैं
सब रूपसियों पर मोहित हैं लिप्सा यौवन की बनी हुई
घर बेटी ले ले जन्म अगर भौहें दिखती हैं तनी हुई
इस सबका मूल वासना है जिसका भय है अवचेतन में
मेरी बेटी या बहिन ठगी जाए न यही भय है मन में
कुछ झुकने पर शर्मिंदा हैं कुछ सजदे पर आमादा हैं
बेटी के परिणय को लेकर चिंतित समाज में ज्यादा हैं
बेटी के पैदा होते ही परिवार व्यग्र हो जाता है
शिक्षा से लेकर परिणय तक क्या होगा? प्रश्न सताता है
कैसे समाज में स्थापित अपने को वह कर पाएगी
भूखे–वहशी लोगों से अस्मत कैसे स्वयं बचाएगी
कैसे दहेज दे पाएंगे कैसे हम ब्याह रचाएंगे
कैसे मायावी दुनिया में इज्जत से हम रह पाएंगे
ऐसे ही कोटि प्रश्न उनको दिन–रात सताते रहते हैं
अनहोनी के ये दुखद स्वप्न नयनों में आते रहते हैं
सदियों से कातर–दृष्टि से नारी को देख रहा नर है
यद्यपि वह पुत्र उसी का है, भाई है कहीं, कहीं वर है।
बदलो समाज के मानदंड बेटी के मन की बात सुनो
नर! आदि–शक्ति को पहचानो मानव–मुक्ति का मार्ग चुनो

jfo d|ekj
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय पय्यन्नूर

61
जरा सोचो

सत्य की मौजूदगी में
झूठ की चमक क्यों है?
है कामना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'
सर्वत्र दर्द क्यों है?
है मंत्र 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'
अज्ञान घोर क्यों है?
था देश 'सोने की चिड़िया'
पावर्टी लाइन क्यों है?
हैं इंसान सब,
कोई नंगा–भूखा क्यों है?
है दुर्गा, काली, लक्ष्मी का देश यह
जुल्म बेटियों पर क्यों है?
गांधी, सुभाष, भगत, आजाद, वाले देश में
आजादी खामोश क्यों है?
'मालिक है सबका एक' तो
नफरत दिलों में क्यों है?
जरा सोचो।

jkt'oj çlkn ;kno
पीजीटी (हिंदी)
के.वि. क्रमांक 5, कलिंगनगर

62
जीवन क्या है?

जीवन क्या है?
सीखना
और
सिखाना

इस जीवन के रंगमंच पर
कितने ही व्यक्तित्व मिले
प्रेम की वाणी से
सीखते सिखाते
हृदयों में घुल मिल गए
गुरु के रूप में
शिष्य के रूप में
मित्र के रूप में
परिवारीजन के रूप में
सबने कुछ न कुछ सिखाया

कुछ रंगमंच से उतर गए
खो गए आकाश में
जाने कहाँ
पर यादें हैं, मधुर स्मृतियाँ हैं
वो रहेंगी
चिर काल तक
या तब तक तो सही
जब तक मैं स्वयं हूँ
इस रंगमंच पर

फिर मैं भी एक दिन
उतर जाऊँगा
इस रंगमंच से
खो जाऊंगा मैं भी
विस्तृत आकाश में

शायद रह जाएंगी
मेरी भी स्मृतियाँ
किसी के हृदय में

और
यही खेल चलता रहेगा
क्योंकि
यही तो जीवन है
सीखना सिखाना
मिलना बिछड़ना
हृदयों का खेल

fufru dqekj feJ
स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, ए.एम.सी लखनऊ कैंट

63
जीवन में कभी रुकना नहीं

अँधेरे से डरकर
दुर्गम पथ से घबराकर
सामने खड़ी चट्टानों से भय खाकर
तुम झुकना नहीं
जीवन में कभी रुकना नहीं।

सत्य की डोर
अहिंसा की राह
कर्मठता को संजोये
पथ कंटको से डरना नहीं
तुम झुकना नहीं
जीवन में कभी रुकना नहीं।

लक्ष्य जो निर्धारित है
सब यहीं लिया सब यहीं दिया
क्या लाये थे?
जिसे छिन जाने के डर से
बीच पथ से मुड़ना नहीं
तुम झुकना नहीं
जीवन में कभी रुकना नहीं।

कल की जीत तुम्हारी है
सत्य, निष्ठा, त्याग, समर्पण
प्रकृति को अति प्यारी है
आगे बढ़ो स्वार्थ–हेतु कभी
अपनी मंजिल बदलना नहीं
तुम झुकना नहीं
जीवन में कभी रुकना नहीं।

jkeku t d|ekj
प्र.स्ना. शिक्षक (शा.स्वा. शिक्षा)
केन्द्रीय विद्यालय, बेतिया, प. चम्पारण

64
तिमिर से लड़ता दीपक

आओ सीखें कुछ हम तिमिर से लड़ते दीपक से,
कैसे जूझना होगा हमको निराशाओं के तम से।
तूफानों के वेग को देखो, कैसे हरदम सहता है,
अपनी धीमी लौ को इकपल ना बुझने देता है।
माटी काया, आकार सूक्ष्म आत्मविश्वास से भरपूर,
उजियारा विजय लघु बाती से जग का अंधियारा करे दूर।
लाख मुश्किलें आयें पथ में फिर भी आगे बढ़ना है,
अपनी आशा की ज्योति को हमें न बुझने देना है।
कठिनाइयों से पार पाने का विश्वास सदा रहे मन में,
पतझड़ ही तो आरंभ है, बहार आने का उपवन में।
चाहे घोर अँधेरा हो या निराशा डाले अपना डेरा,
पर छोटी सी आशा किरण दूर करे अवसाद अँधेरा।
माना नन्हा दीपक सारे जहाँ को ना रोशन कर पायेगा,
किन्तु अपनी मद्धिम रोशनी में राह जरूर दिखलायेगा।
कठिन डगर या पथरीला पथ हो जो अटल हो जायेगा,
मंजिल वही पायेगा जग में हौसला बुलंद कर जाएगा।
नहीं हारनी हिम्मत हमें भी जीवन की बाधाओं से,
यही प्रेरणा लेनी हमको तिमिर से लड़ते दीपक से।

iue dfiy 'kek
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय बूंदी राजस्थान

65
दोहे

कुम्भकार के कर बिना, बर्तन बनि ना पाय।
गुरु के अनुशासन बिना, विद्या कभी न आय।।

गुरु का जो आदर करे, वचनों का दे ध्यान।
पढा हुआ पुनि पुनि पढ़े, श्रेष्ठ शिष्य पहिचान।।

जागरूक जो ना रहे, लक्ष्य कभी ना पाय।
सोते नर के थाल से, रोटी बिल्ली खाय।।

कार्य योजनाबद्ध हो, सदा सफलता पाय।
इंजन से डिब्बा जुड़े, मंजिल तक चलि जाय।।

पय से थन जब भरत हैं, तब ही धेनु रभाय।
गुरुवर गो से श्रेष्ठ हैं, शिष्य हेतु चिल्लाय।।

गुरु प्रति श्रद्धा ना रहे, कभी न मिलता ज्ञान।
उल्टे लोटे से कभी, होता क्या जलपान।।

छाया सुखदा नीम की, भले कटुक हों पात।
कड़वा बोले मित्र यदि, कभी न करता घात।।

fnu'k mik/;k;
टी0जी0टी0 (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय जनकपुरी

66

दौर-ए-ज़िन्दगी

आज अजब दौर है, क्या ये गज़ब दौर है,
आदमी बस आदमी नहीं बना कुछ और है।
खुद बनाई उलझनों के जाल में उलझ रहा.
लाख कोशिशें मगर न जाल ये सुलझ रहा।
दिल में बात और है, जुबां पे मगर और है,
आज अजब दौर है, क्या ये गज़ब दौर है।

आँख मूँद कर के देखो बढ़ रहा ये काफिला.
मुट्ठियों में धूप बंद करने का ये सिलसिला।
लाखों शहंशाह भी हुए हैं खाकों–दर–बदर,
जानता है, मानता है अंतहीन है सफर।
मंजिलों का इस जहां में ओर है न छोर है,
आज अजब दौर है, क्या ये गज़ब दौर है।

झूठ की चमक–दमक है सच अँधेरे में खड़ा,
चेहरे पर सभी के देखो इक नकाब है पड़ा।
आँखों में सजा सभी के ख़्वाब तो हसीन है
पाँव के नीचे मगर ये दलदली ज़मीन है,
जीत उसकी आज जिसके बाजुओं में जोर है
आज अजब दौर है, क्या ये गज़ब दौर है।

ये वक्त बेरहम बड़ा समझ लो इसके रास्ते,
है काटना वही जो बोया दूसरों के वास्ते।
जिन्दगी के इस सफर में हम सभी मेहमान हैं,
जमीं ये अपनी है नहीं न अपना आसमान है।
बेखुदी के हाथों में अब साँसों की ये डोर है,
आज अजब दौर है, क्या ये गज़ब दौर है।

lt ; dekj
पीजीटी (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर–8 रोहिणी, दिल्ली

67
ना हारी हूँ!

ना हारी हूँ ना हारूँगी,
मैं भारत देश की नारी हूँ,
सदियों से लड़ती आई हूँ,
मैं सिंह की सवारी हूँ।
हिम्मत से मैंने काम लिया,
बिखरों को मैंने थाम लिया,
जब–जब आई दुख की घड़ियाँ
आगे बढ़कर संग्राम किया।
मातृभूमि की रक्षा में,
मैंने सिंदूर को वार दिया,
बेटों की बलि दी है मैंने,
ममता का आँचल त्याग दिया।
जब भी आई आँधी मैंने,
पन्ना दाई का रूप लिया,
सिंहासन बचाने को,
अपने ही लाल का लहू दिया।
आसमान से ऊँची उड़ान भर,
कल्पना की कल्पना बन,
सुनीता के रूप में जन्म लिया।
इंद्रा का शौर्य है मुझमें,
प्रतिभा की परछाई है,
सुषमा का स्वराज मुझसे,
सुमित्रा की मुसकान छाई है।
सीमा की सुरक्षा में डटी,
दुश्मन के आगे, पीछे न हटी,
मैं सागर से भी बलशाली,
मैं भारत के गौरव की रखवाली हूँ।
भाई की कलाई हूँ,
पापा की परी कहलाई हूँ।
पति की परछाई मैं,
कंधे का सहारा भी मैं हूँ,
भारत की तरुणाई मैं,
आने वाली अंगड़ाई मैं,
धैर्य–धर्म की रक्षा मैं,
सागर–सी गहराई मैं।
सत्तावन में चमकी,
वह तलवार हूँ मैं,
लाल किले से गूँज उठी,
वह ललकार हूँ मैं,
मझधार में रोक सकेगा कौन मुझे?
मैं खुद अपनी पतवार हूँ।
पाक–चीनियों सावधान!
अपने देश की पहरेदार हूँ।
ना हारी हूँ, ना हारूँगी,
मैं भारत देश की नारी हूँ।
सैकड़ों पर भारी हूँ।
चीत्कार नहीं चिंगारी हूँ,
सिंगार नहीं मैं, सिंह की सवारी हूँ।
मैं फूल नहीं फुलवारी हूँ,
ना हारी हूँ, ना हारूँगी,
मैं भारत देश की नारी हूँ।

d|yk'k pUn j|xj
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि. क्र.2 वायुसेना जोधपुर

68
नारी का सम्मान

मैं सदा आपका सम्मान करूँगा
क्योंकि
बिना सम्मान प्रेम अधूरा होता है
फिर वह हो चाहे माँ से प्रेयसी से
बहन से या पुत्री से
मैं सम्मान करूँगा
आपकी सहमति का और असहमति का
इच्छा का और अनिच्छा का
आपके सपनों का
जीत का और हार का
पर क्यों? क्योंकि
मैं सम्मान करता हूँ आपकी आत्मा का
और आत्मा तो मेरी भी आप सी है
उसका कोई लिंग नहीं होता
यदि मैं पुरुष शरीर में हूँ
तो इसमें मेरा कोई योगदान नहीं
और फिर
शरीर भी कहाँ मेरा है, वह तो पंचतत्वों का है
और उसी में मिल जाना है
तो ये कभी आधार नहीं हो सकता
किसी की श्रेष्ठता का
इसीलिए मैं सदा सम्मान करूँगा
आपका, आप सभी का।

f'ko çdk'k 'kekZ
उप प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 शाहजहाँपुर

69
बुजुर्ग और हम

नहीं थे
पढ़े–लिखे

पर बनाते थे
तालाब,
बचाते थे नदी,
पूजते थे उन्हें
माँ कहते थे,

और हम
पढ़े–लिखे
सुशिक्षित हैं,
पर तालाब
पाटते हैं,
वहाँ बनाते हैं
भव्य मॉल,
फैलाते हैं
गंदगी
नदियों में,
और
धरती का सीना
चीरकर
ढूंढते हैं पानी,
सिखाते हैं कविता
अपने बच्चों को
मछली
जल की रानी है
जीवन उसका पानी है,
भूलकर कि
कविता की मछली
क्या स्वयं
मनुष्य नहीं है?
आखिर हर कविता
क्या किसी मनुष्य का
मनुष्य के विषय में
वक्तव्य नहीं है?

johUæ d|ekj ;kno
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय सी.आई.एस.एफ. भिलाई

70
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

जब देखा माँ को दुनिया में
लाचार सी मजबूर खड़ी,
तब कोख में पलती उसकी
नन्हीं सी गुड़िया बोल पड़ी,
मैं जानूँ माँ तू बेटा चाहे
जो आगे बढ़ाए माँ वंश तेरा,
पर बलि तू मेरी न चढ़ाना
आखिर मैं भी तो हूँ अंश तेरा
मुझे भी अधिकार तो तू देना माँ
इस संसार में आने का,
मैं भी तो सुख पाना चाहूँ माँ
तेरी बेटी कहलाने का,
मुझे पता है माँ ये आसान नहीं
बड़े असमंजस की है ये घड़ी,
तुझे लड़ना होगा मेरे लिए
सहनी होगी मुश्किलें बड़ी,
मैं भी आगे बढ़ना चाहूँ
पढ़ लिख कर कुछ करना चाहूँ,
समय हो चाहे कैसा भी
हरदम मैं साथ निभाउंगी,
बेटे से बढ़कर माँ अपने
परिवार का नाम बढ़ाउंगी,
अपने घर के आँगन में मैं
चिड़िया की तरह चहचहाउंगी,
मैं कली हूँ तेरी बगिया की

सारा जीवन महकाउंगी,
बस हाथ जोड़ करूं प्रार्थना
मुझपर तरस तू खाना माँ,
चाकू और छुरियों से मेरे
तू टुकड़े न करवाना माँ,
मैं भी तो जीवन चाहूँ
चाहूँ संसार में आना माँ,
बस इतना उपकार करना मुझपर
मुझे कोख में मत मरवाना माँ,
माँ तूने भी सुना होगा
अनुसूया, गार्गी, भारती को,
सुकन्या, सावित्री, अत्रि
सीता, मंदोदरी को,
कुछ तो माँ इस संसार में छा रहीं
उनकी सफलता, यश, कीर्ति, सभी को भा रही,
दुनिया मेरी कामयाबी का जब जिक्र करेगी
माँ तू भी अपनी बेटी पर उस दिन गर्व करेगी।

fo t Uæ
प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय चिनैनी, जम्मू

71
बेचैन पाठशाला

खाली स्कूल, गूँजते कमरे,
हिसाब माँगते हैं
अकेलेपन का,
चहकते बच्चों की सुगबुगाहट
का,
बच्चों की शरारतों का,
हिसाब माँगते हैं
मासूम ताकती नजरों का,
बच्चों की नादानियों का,
उनकी बहानेबाजी के उस
असीम भाव का।
दीवारें पूछती हैं
कहाँ गए वो चहकते मासूम?
महकते बच्चे,
क्यों छोड़ दिया हमें अकेले?
हिसाब माँगता है
स्कूल का वो हर एक जर्रा,
वो हर एक हिस्सा,
जहाँ गूँजती थीं,
बच्चों की मनोहर ध्वनियां
कौन देगा हिसाब?
किनके पास है जवाब?
बोलती हैं दीवारें
लौट आओ, ऐ प्यारे बच्चों!
खंजर–सा चुभता है,
यह अकेलापन
हाँ, यह अकेलापन,
हाँ, यह अकेलापन

foukn dekj
टीजीटी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.–2
वास्को द गामा, गोवा

72
मंजिल खुद पास आएगी

ऊषा की लालिमा में प्रभात का आगमन
मन नें नए जोश व उत्साह का अवतरण।
नई चेतना, नई स्फूर्ति मन का नाचे मोर
आशा और उत्साह से मच गया शोर।
नभ में पक्षी कलरव करते, बोले शीतल मंद समीर
हिम्मत कर तू आगे बढ़ फिर, क्यूँ छोड़े है धीर।
कल तक थे यूं जोश–जोश में, काम में डूबे परन्तु होश में
आगे बढ़ता हर पल, हर क्षण, आज हो गए धीमे क्यों पग?
आगे बढ़ना ठान लिया तो, मुश्किल से घबराना क्या
बाधाएँ तो आएंगी ही, रास्ते हों जब नए बनाना।
मन को करो एकाग्र तुम साधो निशाना लक्ष्य पर
विचलित न हो, न हो अधीर, छोड़ दो तरकश से तीर।
रखो बुलंद हौसले, गर पराजय भी मिले,
हिम्मत जुटा, मन को समझा, संघर्ष से अब तू न घबरा।
मंजिल भले ही दूर हो, राह कांटो से चूर हो
पग–पग पत्थर और चट्टानें, संगी साथी लगे कतराने।।
ना विचलित कर मन, तू आगे बढ़, नई राह पे चल ले उत्साहित मन।
रास्ता खुद राह दिखाएगा, पत्थर भी पिघल जाएगा।।
बिछुड़े संग मिल आगे चल, मंजिल खुद जाएगी मिल।
पीछे न हट, न घबरा मन, करता जा कर्म तू हरदम
जो आगे बढ़े मुस्कुराते हुए, हर मुश्किल को आसान करे
हो कितनी भी दूरी पथ की, मंजिल खुद बढ़ पास आएगी।।

fouhrk u : yk
प्राचार्या
केंद्रीय विद्यालय भा.नौ.पो, हमला

73
माँ की बहुत याद आती है

जैसे–जैसे उम्र की गाड़ी वर्षों की
पटरी पर दौड़ी जाती है
माँ की बहुत याद आती है।
वो आँगन में चश्मा लगाए,
चारपाई पर रखी सिलाई
की मशीन का हत्था हिलाती
सुई की नोक में धागा
पिरोते दिख जाती है तो
माँ की बहुत याद आती है
रंगीन सूती साड़ी व सफेद ब्लाउज में
बहुत ही कम शब्दों में अपनी
बातें समझाती हुई माँ की
बहुत याद आती है।
सुबह अपने स्कूल जाने की
तैयारी में, माँ को रसोई से
बुलाकर अपने बालों की चोटी बनाना
और उसे फिर से बनवाना और नाराज
होना।
माँ तुम्हारी बहुत याद आती है
तुम्हारी कर्मठता को तुम्हारे संस्कारों
से पाया
सुघड़ता को तुम्हारे आलिंगन से
अपने जीवन में पाया
तुम्हारी चुप्पी आज भी
अश्रुधार दिए जाती है

आज विद्यार्थियों को महिला
सशक्तीकरण का पाठ पढ़ाते हुए
तुम्हारी तस्वीर सहज ही नजरों में
उतर आती है
माँ तुम्हारी बहुत याद आती है
तुम भी तो सशक्त थी माँ
फिर क्यों न अपनी आवाज
उठा पाती थीं, तुम्हारे एकाकीपन
आँखों से न रुकते आँसू
तुम्हारी विवशता दर्शाते थे
क्यों न समझ पाई तुम्हें
आज मन चाहता है
कि तुम हो और तुम्हें छू लूँ मगर अब तुमसे
अपनी गोद में सिर रखने की
मूक स्वीकृति नहीं मिल पाती है
माँ, तुम्हारी बहुत याद आती है।

M,- uru i t
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल यलहंका

74
मानवता का शैक्षिक आंदोलन

केंद्रीय विद्यालय संगठन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।
संस्कृति सभ्यता संस्कार का गठन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

उच्च विचार उच्चतम शिक्षण,
हर क्षण करते मार्गदर्शन,
विलक्षण हमारे गुरुजन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

कब बुलबुल स्काउट गाइड,
करते अनुशासन में संतुलन,
सेवा का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

मन कर्म वचन से बच्चे,
रहते हमेशा मगन लगन से,
करे शौर्य से देश को रौशन,
मानवता का शैक्षिक आंदोलन,
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

विद्यालय का वातावरण,
करे सरस्वती का आवाह्न,
महकाता व्यक्तित्व का उपवन
केंद्रीय विद्यालय संगठन।

geyrk lkuh
पीजीटी (सी.एस.)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 02 सी.पी.ई.
इटारसी

75
तू अपने सपने के लिए युद्ध कर

माना हालात प्रतिकूल हैं, रास्तों पर बिछे शूल हैं
रिश्तों पे जम गई धूल है
पर तू खुद अपना अवरोध न बन
तू उठ, खुद अपनी राह बना

माना सूरज अँधेरे में खो गया है
पर रात अभी हुई नहीं, यह तो प्रभात की बेला है
तेरे संग हैं उम्मीदें, किसने कहा तू अकेला है
तू खुद अपना विहान बन, तू खुद अपना विधान बन

सत्य की जीत ही तेरा लक्ष्य हो
अपने मन का धीरज, तू कभी न खो
रण छोड़ने वाले होते हैं कायर
तू तो परमवीर है, तू युद्ध कर–तू युद्ध कर

इस युद्ध भूमि पर, तू अपनी विजयगाथा लिख
जीतकर के ये जंग, तू बन जा वीर अमिट
तू खुद सर्व समर्थ है, वीरता से जीने का ही कुछ अर्थ है
तू युद्ध कर–बस युद्ध कर।

ehrk xIrk
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, बरेली

76
वो बचपन एक फूल था

खेल–खेल कर पढ़ते रहते, बचपन मानों फूल था।
रहता था मैं नानी के घर, जहाँ एक प्यारा स्कूल था।
मामी वहीं पढ़ाती थी, मैं मामी के संग जाता था।
बचपन था अलमस्त मेरा, मैं लड़ता, हँसता, गाता था।

मामा के घर एक गुरुजी, बेटे के संग रहते थे।
बेटा उनका तंग, उसे बस, पढ़लो–पढ़लो कहते थे।
फिर भी उस प्रतिभाशाली के पल्ले कुछ न पड़ता था।
मैं पढ़ने में सरपट आगे, उसका घोड़ा अड़ता था।

कैसा था स्कूल गाँव का, हाथ में रहता झोला था।
ना जूता, ना टाई–बेल्ट, हर बच्चा कितना भोला था।
नहीं बेंच थी, नहीं डेस्क, हर कोई बोरा लाता था।
ना चपरासी, ना भृत्य कोई, विद्यार्थी झाड़ू लगाता था।

बच्चे डरते थे गुरुओं से, शारीरिक दण्ड की भाषा थी।
खरिया–स्लेट और कलम–दवात उज्ज्वल भविष्य की आशा थी।
अंग्रेजी, जी.के., इ.वी.एस., लाइब्रेरी न कम्प्यूटर था।
ना कैल रूम, ना एक्स्ट्रा करिकुलर, ना डांस–म्यूजिक की
टीचर थी।

खूब उलझता गणित से, घोटता खूब विज्ञान था।
डॉक्टर और इंजीनियर बनना, मात–पिता–अरमान था।
दिल मचल–मचल कर कहता, काश वो बचपन फिर आए।
और ख्वाब बना जो तैर रहा, हर सपना पूरा हो जाए।

xkiky çlkn >k
पुस्ताकाल्याध्यकक्ष
केन्द्रीय विद्यालय गार्डेन रीच

77
मैं सृष्टि हूं

मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मैं सृजन–विनाश की
सतत चलने वाली क्रिया हूं
मैं हर क्रिया की सुन्दर बस्ती हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मैं सुवासित शीतल बयार हूं
रंग बिरंगे फूलों का हार हूं
खेत खलिहान बाग बहार हूं
मैं समस्त धरती की पुष्टि हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

कभी आंधी तूफ़ान बन
घूमती शहर वन–वन
मैं जंगल और पहाड़ हूं
नदियों की चंचल धार हूं
मैं पूरी प्रकृति की दृष्टि हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मेरा दायरा बहुत बड़ा
इसमें समाहित संसार सारा
कहीं काला कहीं गोरा
मैं हरेक आदमी की हस्ती हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मैं हर जाति– धर्म का मेला हूं
मुझमें गीता कुरान बाइबल है
मुझमें विविध धर्म ग्रंथों का ज्ञान है
मैं सभ्यताओं के संगम की कश्ती हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मैंने देखा है भयावह प्रलय काल
विविध विभीषिका विकराल
बीमारी आतंकवाद अकाल
हर आपदाओं से उबरने की कृति हूं!
मैं सृष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

मैं सबके स्वरूप को निखारती हूं
धरती को सदा विकसित करती हूं
कभी गलतियों की सजा भी देती हूं
मैं इंसानों के बंधन और मुक्ति हूं!
मैं सष्टि हूं
मैं कभी मर नहीं सकती!

jhrk dekjh
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय नं. 2 बेली रोड पटना

78
लोहे की मशीन

आदमकद प्रतिमा
जो वाचाल की–सी भाषा में
पाषाण–मानव के बधिर कर्ण में
अश्रु–जल से सिंचित,
कोमल–कपोल को सहलाती हुई
उसके रक्तिम इतिहास को
स्वर्णिम वर्तमान से कवर करती हुई
मानो पुरुषार्थ को ललकारती हुई,
चमचमाते भविष्य को
थाती की तरह
जिसे लौटाया न जाना हो,
सौंपती हुई
स्थायी भाव में बोल उठी–
मैं साम्यवाद के खंडहर पर
आच्छादित समाजवाद की उर्बर चादर पर
अंकुरित लोहे की मशीन हूँ।
वहीं, मैं–कल तुम्हारा रक्त चूस रही थी,
केवल एक की रगों में रक्त का प्रवाह ज्यादा था,
मेरी गर्जना से तुम भयभीत थे,
केवल एक कर्ण पटल पर सप्त–सुरों का राग प्रखर था।
वहीं, मैं–आज सबों में रक्त का संचार कर रही हूँ
एक नहीं सबको तृप्त कर रही हूँ
मेरी गर्जन के तारसप्तक से
सभी मुग्ध हो रहे हैं।

कुछ प्रबुद्ध जनों के पाखंड ने
शोषक–शोषित, मालिक–मजदूर
अमीर–गरीब, राजा–प्रजा
जैसे शब्द–जाल के चक्रव्यूह में,
सबको भ्रमित किया था
मेरी प्रबल शक्ति को क्षीण किया था।
आज मेरे नए कलेवर में
सभी ज्ञानी अस्त हैं, पस्त हैं
न जाने कहाँ व्यस्त हैं।
मैं सच कहूँ–तो
मेरे नर्तन पर
लाखों को काम मिल रहा है
लाखों का पेट भर रहा है
कौशल–विकास हो रहा है
अर्थ का पहिया चल रहा है
गाँव शहर बन रहा है
देश आगे बढ़ रहा है।

Jh/kj ik.Mk;
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय नं 4 वाराणसी

79
वन में सावन

अविरल अविराम अगणित बल से
सिंचित करने को शीतल जल से
वसुधा भी महक उठी है अब तो
सावन तेरी सहज–सरल–तरल से।।

कम्पित कर–कर–के है कहता
सौरभ–सौम्य–समीर है जो बहता
जो न पिघला फिर मेरे रव से
अतृप्त सदा फिर जीवन है रहता।।

कल–कल कलरव करती है सरिता
नव पल्लव से पल्लवित है ललिता
कल–कल छल–छल के कोलाहल से
हो रही है बाधित वन की नीरवता।।

खुले हैं पट अब नव–अंकुरों से
पड़े थे अब तक जो क्षण–भंगुरों से
किसलय कुमकुम से सुशोभित
कुंज–वन लग रहे रण–बांकुरों से।।

हरित–हरितिमा चहुँ ओर है छाई
आ गई हो जैसे सब पर तरुणाई
बालक–वृद्ध सभी अलमस्त हुए हैं
लगता है किसी ने जैसे भाँग पिलाई।।

मधुवन की तरु–लताएँ भी हैं गातीं
मधुर–मधुर सुर–ताल सुनातीं

सुर–लहरियों को सुनकर है लगता
जैसे नव–तरुणी पदचाप सुनातीं।।

गीले वन हैं गीले हैं पत्ते
हरपल जिनसे निर्झर हैं झरते
जलधर भी आनंदित होकर
मस्ती में यह गा–गाकर जाते।।

सावन तुम हमें बहुत रीझाते
सावन तुम हमें बहुत रीझाते।।

n;kuUn Hkkb
प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय मैथन डैम, धनबाद

80
चप्पलें

किनारों पे छप गई है उंगलियां
दबाव से बन गए है पंजों के निशान
और सुगढ़ता से धंस चुके हैं
तलवों और अंगूठों के माप
गैर मौजूदगी में भी अस्तित्व के स्मारक
की तरह मौजूद हैं चप्पलें
संघर्ष और विडंबनाओं की साक्षी चप्पलें
जितनी ऊपर से घिसी हैं उससे कहीं ज्यादा
खोखले हो चले है उनके पायते
जीवन की विकट राहों पर
निरीह अकेलेपन में जब कोई नहीं था
तो शायद पैरों में थीं उनके ये चप्पलें
शरीर और संवेदनाओं का बोझ
मानसिक प्रताड़नाओं के निशान
और जरूरतों की बोझिलता
सब उकर गई हैं उनपर
सीढ़ियों पर रखीं उनकी चप्पलें
अब अक्सर मैं पहन लेता हूं
मेरे अंगूठे, उंगलियां, और तलवे
उस आकार में विलीन हो जाते हैं
और मैं महसूस कर पाता हूं उनके दुःख
जो उनके ना होने पर भी चप्पलों में मौजूद हैं।

xkjo 'kek
टीजीटी (सामाजिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय एयर फोर्स स्टेशन बीदर

81
तमन्ना

इतनी सी है तमन्ना, किसी को खुशी दे पाऊं।
और कुछ ना सही, रोते को हंसी दे पाऊं।।

खुदा से यही इबादत है किसी के काम मैं आऊं।
गर ख्वाहिशें पूरी ना कर सकूं, जरूरतें तो पूरी कर पाऊं।।

चाहत है दर से कोई मायूस ना लौटे कभी।
खुद की खुशी से, उन्हें भी खुशी दे पाऊं।।

शोहरत ही सिर्फ पायी तो क्या पाया।
पाना तो वही, जिसमें औरों को कुछ दे पाऊं।।

कोशिश है कोई बेसहारा न रह जाए कहीं।
हर कदम का साथ ना सही, सहारा तो दे पाऊं।।

दुआएं बदल देती हैं तकदीर इंसान की।
इबादत यही खुदा से, मैं दुआ सबकी ले पाऊं।।

ch-, y- ekjkfM;k
उपायुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन,
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

82
मुस्कान

मुस्कान कुदरत का दिया ऐसा अनुपम–अनोखा नूर है।
मुख–मण्डल की आभा को बिखेरता जैसा कोहिनूर है।
प्राणी–जगत में सिर्फ मानव को मिला अछिन्न उपहार है।
विधि की झोली से छलक पड़ी यह विधाता का बड़ा उपकार है।
वैसे तो मन–लुभावनी मुस्कान के होते विविध रूप हैं।
पल–पल जोड़ती–तोड़ती दिलों के बंधन इसका यह स्वरूप है।
मन–लुभावनी मधुर–मुस्कान, मृतक में भी डाल देती जान है।
फिदा हो नर मुस्कान पर, कर जाता अपना सारा जगत–जहान है।
शाश्वत मुस्कान दिलों को जोड़ अमरत्व का कर जाता संचार है।
टूटी–बिखरी, भूली–बिसरी यादों का, अमूल्य जीवन ही सार है।
कृष्ण की मंत्र–मुग्ध मोहिनी मुस्कान गोपियों के दिलों से जुड़ जाती है।
कुल की कानि छाड़ि गोपियाँ फिदा हो सजीले कान्हा की ओर मुड़ जाती है।
मुस्कान का दूसरा रूप कुटिल, दिलों को छलनी–छलनी कर जाता है।
लुट जाती सारी संचित खुशियाँ, सारा जीवन खंडहर–सा बन जाता है।
बनावटी, खिसियानी मुस्कान, जीवन का यह भी एक रूप है।
मार गया लकवा मानो चेहरा बन जाता भयंकर विकृत कुरूप है।
फोटो–ग्राफर के उस जीवन–दर्शन को देखो, जो बड़ा यह गंभीर है।
प्लीज स्माइल कह कैद कर लेता कैमरे में, कितना बड़ा वह पीर है।
बड़े ही भाग्यशाली वे लोग जिन्हें कुदरत का मिला यह वरदान है।
सदा विराजती मुस्कान मुख–मण्डल पर, दुनिया बनती उनकी कद्रदान है।
मुस्कान के बिना ऐसा लगता चेहरा, मानो चेहरे पर काली घटा घिर आई हो।
उजड़ गई हो जीवन की सारी खुशियाँ, चेहरे पर सावन की घटा छाई हो।
मुझ लाल की कभी अपनी मुस्कान निराली थी, जो ओठों से फिसल गई।
पता नहीं जीवन के किस गह्वर में खो, चेहरे से सदा खिसक गई।
इसलिए मेरी मानो यारों, जीवन की इस निधि को हाथ से न जाने दो।
सदा हँसते, खिलखिलाते मुस्कराते रहो, इस विधि को हाथ से न जाने दो।।

ykypUn jke
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–1 जालहल्ली

83
पेंसिलों ने जो कहा

पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर,
अनकही सी आहों को, किताबें बुन लें अगर।
ये जहाँ भी फिर हर रोज सा मुस्कुराएगा
छात्रों ने जो कहा, दुनिया ये सुन ले अगर।।

उस हीरे से मोती को, अखियाँ जो चुन लें अगर,
उन बहती सी नावों को, नाविक चुन ले अगर।
मरहम ही मरहम को मरहम बनायेगा
पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर।।

मेरी जुबानी भाषा को, किताबें चुन लें अगर,
मेरी इस क्षेत्रीय भाषा को, कौमी भी सुन ले अगर।
बहुभाषा का त्यौहार फिर यह जग बनायेगा
पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर।।

इक राही की राहों को, राह जो सुन ले अगर,
उन खुली फिजाओं को, उड़ानें चुन लें अगर।
मंजिलों को ये पंछी भी पा ही जायेगा
पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर।।

उन रातों की रात्रि को, किरणें जो चुन लें अगर,
उन खिलते से फूलों को, महक जो सूंघ ले अगर।
के.वि. संगठन भी, तारों–सा टिमटिमायेगा
पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर।।

सलेटों में है जो लिखा, दीवारें चुन लें अगर,
बस्ते, कॉपी की बातों को, प्रवीण–सा गुन लें अगर।
वो खुदा भी इंसां में फिर मिल ही जायेगा–2
पेंसिलों ने जो कहा, कलम ये सुन ले अगर।।

çoh.k
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय लोंगडिंग, अरुणाचल प्रदेश

84

हम सबका अभिमान - केंद्रीय विद्यालय

ये मेरा केंद्रीय विद्यालय है, ये हम सबका केंद्रीय विद्यालय है
ये राष्ट्रीय संस्कृति का वाहक, ये हमारा भारतीय विद्यालय है।

लघु भारत की झांकी इसमें, भारतीयता पहचान है
'तत् त्वं पूषण अपावृणु'– यही मंत्र यही गान है।

सर्वांगीण विकास लक्ष्य है इसका, शिक्षा में सर्वोत्तम है
संगीत, कला और खेलकूद में सर्वश्रेष्ठ, अति उत्तम है।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से हम सबका मेल कराता है
भाषा, धर्म, क्षेत्रवाद की संकुचितता से सबको मुक्त बनाता है।

शिक्षा जगत में ध्रुव–तारा सम, यह हम सबकी शान है
राष्ट्रहित में सदा समर्पित, यह हम सबका अभिमान है।

ज्ञान और विज्ञान जगत में, परचम अपना लहराया है
देश विदेश में कार्य कौशल से, दमखम अपना दिखलाया है।

सब लोगों की आशा का दीपक, एक महती जिम्मेदारी है
निभा रहे हैं कार्मिक श्रेष्ठ, बखूबी, जाने दुनिया सारी है।

है दुआ यही, अरमान यही, इच्छा भी हम यही रखते हैं
गौरव बढ़े हमेशा इसका, बुलंदी छूने की कामना करते हैं।

ये मेरा केंद्रीय विद्यालय है, ये हम सबका केंद्रीय विद्यालय है
ये राष्ट्रीय संस्कृति का वाहक, ये हमारा भारतीय विद्यालय है।

y[kjkt ehuk
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय चूड़ाचाँदपुर

85
बिन्दु से सिंधु तक

सूक्ष्म बिन्दु सी बूंद जन्म उत्तुंग शिखर
चहुं ओर श्वेत ही श्वेत राशि हिम सदा प्रचुर
है देवभूमि पावन पुनीत गोमुख घर मेरा
जहां पूर्ण शांति का वास दिव्यता ओज प्रखर। 1।

निश्चय ही होंगे पुण्य कर्म कृत जन्म–जन्म के
तब जन्म दिया मुझको प्रभु ने था इस धरणी पर
शिव–लोक जहां शुचिता का होता वास सदा
संगीत परम नित झंकृत करती वायु सदा। 2।

उत्तुंग शिखर जननी मेरी, नभ हैं पितु मेरे
पर नहीं जानती जनमत क्यों त्यागा था मुझको
छोड़ दिया क्यों मुझे भटकने निस्सार जगत में
मैं अबोध, अंजान कभी ना पूछ सकी यह। 3।

गंगोत्री कहकर लोगों ने जन्म स्थल मेरा ध्याया
पर नियति बनी थी मेरी ऐसी तुरंत तभी था विदा किया
हुआ अवतरण उच्च शिखर से मेरा घाटी पर था जब
कल–कल निनाद संगीत सुनाती बढ़ी चली अविरल मैं तब। 4।

मेरे सहचर कई बने थे जग की कठिन डगर पर तब
पथरीली कंटकाकीर्ण थी राह हमारी सब की सब
भागीरथ की विकट साधना का प्रतिफल मैं कहलाई
कर्तव्यबोध तब हुआ मुझे जग तारण कारण मैं आई। 5।

अविरल गति से चली डगर पर परहित का उद्देश्य लिए
फिर दिवस रात्रि की बात भूल बस चरैवेति संदेश लिए,
राह सरल हो या दुर्गम हो, परवाह नहीं मुझको इसकी
फिर देवप्रयाग अलकनंदा मिलि मुझको गंगा नाम मिला। 6।

गंगा बनकर मेरे थे कर्तव्य वृहत से वृहत हुए
ऋषिकेश पहुँचकर मेरी गति पहले से कुछ शांत हुई,
ज्यों बाला कोई बाल्यकाल तजि यौवन में पग धरती है
फिर चंचलता को तजकर वह गाम्भीर्य वरण कर लेती है। 7।

हरिद्वार हरि–हर की नगरी महातीर्थ धरती का है
श्रद्धा, आस्था और धर्म का नित जहां लगता मेला है,
गति मंथर हो जाती मेरी रंग रूप सब बदला है
मानो जन–मन की सकल कलुषता बहकर मेरे साथ चली। 8।

भिन्न प्रदेशों की धरती को सिंचित कर आगे बढ़ती
पाप–मोचिनी बनकर जन के पाप– ताप मैं हर लेती,
जन का भाव समझ नहीं आता क्यों ऐसी दुति होती है
एक ओर आरती उतारें दूजे अतिशय मलिन करें। 9।

लेकिन मेरा एक धर्म है और मनोरथ कोइ नहीं
मान करें या निंदा मेरी विचलित होती कभी नहीं,
हरिद्वार की पैड़ी हो या फिर घाट बनारस हरिश्चंद
अंतर भारी है देख लिया इसीलिए गति हुई मंद। 10।

निश–दिन अविरल चलते–चलते तब गंगासागर आता है
मील हजारों की यात्रा कर परम लक्ष्य मन पाता है
बिन्दु–सिंधु या सिंधु–बिन्दु में कहना कुछ आसान नहीं
हैं युगों–युगों से शोध निरत पर आया है परिणाम नहीं। 11।

बिन्दु–सिंधु की यात्रा का संदेश जगत को जाता है
कर्म सदा ही करते रहना लक्ष्य स्वतः आ जाता है
मानव तेरी सीमा सीमित, है अनंत की बात यहाँ
विज्ञान ज्ञान जहां पहुँच सके ना नेति–नेति संदेश वहाँ। 12।

ih-lh- [kYc
वरिष्ठ अनुवादक
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

86
अजनबी शहर

अजनबी शहर का पहला दिन यूं राहों में ही सिमट गया
मन ही मन बोला खुद को लो आज का दिन तो निपट गया।

रात को जब बिस्तर पर लेटा दीवारें यूं देख रहीं थीं
शहर में मेरा पहला दिन है शायद मुझ से कह रही थीं।

सुबह को जब नींद खुली आँखों में घर की यादें थीं
सुबह की चाय का पहला प्याला जो छोटी बहन बनाती थी।

उस शहर की गलियां और चौराहे मानों मुझसे कह रहे हों
यह तुम्हारा नहीं हमारा शहर है जहां पर तुम रह रहे हो।

नए लोग नई जगह और नया समाज था
लोगों के चेहरे थे बस अलग–अलग बाकी दर्द समान था।

इतनी भीड़ है इस शहर में कि खुद को पहचानना मुश्किल हो जाता है
फिर ख्याल आता है शायद आईना इसलिए बनाया जाता है।

इस शहर के लोगों का व्यवहार अक्सर मुझको बतलाता है
तुम हो अनजान शहर के शायद यह अहसास दिलाता है।

अजनबी शहर में या अजनबी शहर दोनों में कोई भेद नहीं
उसका दर्द न मैं जानूं मेरा दर्द न वो, इसका मुझको कोई खेद नही।

çnhi d|ekj
कनिष्ठ सचिवालय सहायक (प्रशा.2)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

87
मंजिल दूर नहीं

सोचा नहीं था इस जीवन में जा पाऊँगी नदिया पार
देख दूरी मंजिल से, रह जाती थी स्तब्ध हर बार
कदम फिर भी आगे बढ़ने को रहते बेताब
ख्वाबों के परिंदे रोज एक नयी आशा के साथ
रोज नयी उमंग भरी, एक अजीब सी खुशी से शुरुआत
करती हर रोज उमंग से फिर सब पाने की आस
पता चला जब धीरे–धीरे पहुंच गयी मंजिल के पास
मजा बड़ा ही अलग था, उस दिन जब आंखों का वो ख्वाब
हाथ में था और जो मुश्किल लगा था कभी वो पास में था
आज सामने था हाथ फैलाये और तैयार मुझे गले से लगाए।

lhek 'kek
वरिष्ठ सचिवालय सहायक (बजट)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

88
मेरी जिम्मेदारी

ले लो मुझ से सब जिम्मेदारी,
बना दो फिर बच्चा मुझे।
थक गया हूँ माँ बहुत मैं,
झूला फिर झूला दो मुझे।
ऐसा नहीं कि सक्षम नहीं हूँ।
थोड़ा विराम तो दे दो मुझे।

करनी है अभी बहुत चढ़ाई,
कुछ देर तो रुकने दो मुझे।
लड़नी हैं, अभी कई लड़ाई,
आराम तो करने दो मुझे।
अभी हंसाना है, बहुतों को,
कुछ देर तो रोने दो मुझे।

धोखे के कई रूप हैं देखे,
अनदेखा करने दो मुझे।
मतलब की है दुनिया सारी,
कुछ बिन मतलब करने दो मुझे।
चलना भी है, फिर से, दौड़ना भी है,
कुछ पल तो थमने दो मुझे।

प्यार दोस्ती सब एक नाम हैं,
अब गुमनाम ही रहने दो मुझे।
वक्त गुजरा है, और लोग भी,
खुद संग रहने दो मुझे।
जरूरत भी बहुत बेवफा है,
गैरजरूरी रहने दो मुझे।

किसकी किसमें हिस्सेदारी,
नजरअंदाज करने दो मुझे।
गदर मची है, अंदर से कुछ,
शांत तो करने दो मुझे।
नहीं रहा कुछ पहले जैसा
ऐलान तो करने दो मुझे।

लेलो मुझ से सब जिम्मेदारी,
बना दो फिर बच्चा मुझे।
थक गया हूँ माँ बहुत मैं,
झूला फिर झूला दो मुझे।
ऐसा नहीं कि सक्षम नहीं हूँ।
थोड़ा विराम तो दे दो मुझे।

uUn fd'kkj Nxk.kh
कनिष्ठ सचिवालय सहायक (वित्त विभाग)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

89
Freedom

ELUSIVE Treasure, Are you?
The most Coveted Prize
The most Precious Possession,
We THE Dissatisfied hanker after
And yearn for, since Ages!

Thought I that Freedom is Being 'ME'
ASSERTING Myself, Rebelling Against
Norms Established, Catapulting myself
To the Zenith of my Ego bordering on
'ID' many a time, hurting self and kin!

My Might did my thoughts affirm,
So did my words proclaim
My Deeds! Yes "mere" deeds!
Stood they a strong Testimony
To My relentless Fortitude!

As the tide of TIME and AGE Blew down
The dust of ignorance, innocence and naivete,
Razed away were Pettiness, Authority and
The I in me! And then, then, Blossomed I
In the Splendid spring Garden of LIFE.

DISSEMINATING the fragrance of love,
Compassion, Care, Concern And Lo!
Behold a Resplendent New World,
Blessed with showers of joy and peace
Where LOVE CAME, SAW and CONQUERED.

S Radha
TGT (English)
Kendriya Vidyalaya MEG & Centre

90
A Suggestion

Whither goest thou? Youth of today!
There are blisters in your feet,
Your hair dishevelled and eyes sunken.
You seem to have lost all hope for future.

Your face lustreless and your heart vanquished,
You are crushing your soul each moment,
Unfocused, pointless, drifted from truth,
Mislead by mendacious preachers,
Injudiciously anguishing humanity.

Rouse yourself! Life is precious, be alert, awake yourself.
Loiter not feeble, devoid of energy,
Open your eyes widen them and look,
In what a piteous state, you have been thrown by your fake messiahs.

Be sensitive. Go to the borders once,
Observe deeply the struggle of your Indian soldiers.
Be a part of them. Live their life for a day of two.
Realize their agony and pain.

They are sacrificing their lives; not for personal reasons.
Battling they are for your security and freedom.
Even at the highest altitude with difficult breathing;
Keeping you only in view as their priority.

For their honour, throw away your blind beliefs.
Turn off the folds from your eyes,

Be vigilant and prudent recognize your foes,
Serve your nation, pay the debt of your motherland.

Also go to the fields once .
See the toil of Indian farmers, be a part of them,
Bake yourself in the sun.
Take spade in your hand dig out the ground,
Sow the seeds of wisdom,
Turn the direction of opposite streams
To irrigate the parched earth.

Harvest the crop of love with dedication,
Grow grain to feed the hungry children of your nation,
Win the hearts of your countrymen,
Mother India will be proud of you,
And the earth will disgorge gold for you.

Manisha Sharma
TGT (English)
KV AGCR Colony Delhi

91
'Better' in, 'Worst' out

I stay In, to stay Out
I 'shake' to 'shake'.
I feel in, I feel out
I feel the silence In, I feel the Noise in the Silence Out.

I am more close to me, I am 'close' to people around me.
Down on earth people dyin', upon the sky birds flyin'
Nature is healing, humans are kneeling.

Sad am I a bit, happy am I a bit
What is Virus weakening? Immunity or humanity.
Many dies suffering, Some dies saving.
Some struggle for revival, some search land for decent burial.

Upon the elite sky, the carrier on board, beneath walk the downtrodden sufferer on the road.
We shall come back, we shall walk again, but at what cost?
As I walk out, the beauty fades in.
I am 'Better' in, I am 'Worst' out.

Jitendra Singh
TGT (English)
KV Kashipur, Uttarakhand

92
Each Drop Counts

How precious water is
Everyone quite aware
What then the constraints are?
Make us least bothered to care.
This beautiful aqua as a savior
Makes our each day happier,
Has now reached to a point
When we need it as reservoir.
Life, nothing but lifeless
Nature, just listless
Without this magical treasure
We , nothing but helpless and hopeless
What are we waiting for
We need indication any more?
Let's join our hands together
To conserve water
And let this notion flaunt,
Each drop counts, Each drop counts.

Pooja Chauhan
PGT (English)
KV Tagore Garden, New Delhi

93
A Tale of Corona

The deadly dragon emits poison blue
Leaving millions in slumber slew.
It spreads from one to another
With a touch of a near dear.

'Corona' was it christened initially
'Covid-19' was it declared finally
How terrible was its roar!
London to Washington go uproar.

Journey comes to a standstill
Pauses the hustle and bustle thrill
It came stealthily in and around
Before we could figure its sound.

Delhi to Chennai, Mumbai to Kolkata
It hides in veins of *chhota* and *mota*
He, then harangues the lockdown bell
Sending the mango man inside the well

The wonder world sends threat messages
With its death tolls mounting savages.
China, Italy, Spain, America
Corpses laid in coffin funeralla.

We hailed the Avengers brave
With beating thali, thanking claps
Warriors battle inside ICU
Denizens penance inside too.

Corona brings misery to many
Could not pay EMIs any

Stranded several here and there
Starvation was their friend forever.

Then came hands of the deity
Poured help over poor and pity
Presiding God blesses the human
Gave food, shelter and ration.

Earth appears to be clean and green
Making mountains visible seen
Ganga goes crystal clear
Dolphins, fish could be seen here.

'Namaste' is now the favourite greeting
Wearing a mask is the ritual creating
Need to maintain the social distancing
Don't forget the hand washing.

We're not going to give up
Will fight till breath is up
India shall smile again
And conquer this virus train.

Rahul Chakrakar
TGT (English)
K.V. Nayagarh, Odisha

94
The Earth needs a break

As long as darkness prevails
The light can't shine brightly;
As long as flame of faith illuminates
Fear cannot overpower mind.
There was a time when life walk'd on earth;
The river went on for miles with fish, trees and grass;
Gradually, outpacing planet's ability to absorb disaster;
Out of the blue invisible foe havoc the world;
Virus puts humanity to its knees;
Little prospect of dire state remedied;
Little preparedeness externally yield;
Panic, conspiracy theories trumpet the globe;
the health war wage the minions microbe;
adversity, illness pose a challenge;
dealing the threat with imbalance;
the world fails to enact protectorate;
pay the way to corona etiquette;
slather our hands with sanitizer;
stay at home to flatter curve riser;
plastic waste, pollution at halt;
endangered animals take a sigh;
less of malice and revolt gridlock;
value of life envisioned brotherhood;
no more deafening sounds of cars;
no more oil being spilled into ocean;
with cudgels of hope the angel mask men dart;
in the hospitals with their healing art;
the samaritans at work take the charge;
restore right of living at large;
as they say-" you reap what you've sown".
a warning for our final hour;
nature takes over when humans defy;

equal balance in thy dealing;
glooming pandemic led to our faltering;
black may be the clouds ahead;
still finds gifts in the knock of life;
the storm will calm down;
the earth needs a break;
everything happens for a reason;
that's a final notice from our Planetary Landlord;
so let us plant a better seed;
curb ripping apart nature for profit;
let human spread virus of solidarity;
let the world witness metamorphosis of humanity.

R. Sujatha
PGT (English)
K.V. No.2 Shivaji Nagar, Bhopal

95
A Step Towards Self Reliance

Just believe in yourself
Be real & hold true to yourself
Don't try to change entrenched personality
To keep up with the way other people behave
Your dreams and ambitions will take you
A step towards Self Reliance.

True happiness & fulfilment
Can only come through a recognition of one's own
Uniqueness, talent & effort. Envy is ignorance,
When puts heart into work will take you
A step towards Self Reliance.

Take advantages of educational opportunities
Practice sound principles of nutrition and hygiene
Develop spiritual, emotional and social strength
Work is the source of happiness, self-worth & prosperity
Willing to work will take you
A step towards Self Reliance.

Sarita Ambrose
PGT (Chemistry)
KV MEG & Centre Bangalore

96
Fortitude: An Indispensable Chum

Befriending me is not a mere creditable gain,
Consider it an unageing reassurance of your redoubtable strength;
I am your unflinching belief to stay calm and firm against callously trying times,
I transform ebullient wishes of Autumn into the regenerative Vernal vigour.

Failures may be frequent,
Don't fidget, just count them necessary for better days;
I am here to cultivate your grit to stand steady and stronger every time you stumble,
Ever looked at a belligerent boat, bewildered by berserk breakers (waves)?
What a spunk! It still cruises through to explore horizons beyond.

When do failures question dauntless spirit of a persevering protagonist?
A heroic mettle often reduces tentative setbacks into musty myths;
Dear pal, debutant experiments are seldom rewarded in their maiden attempts,
You know, the winning wrestlers are groomed by the very soil they wallow on,
When does a steadfast squirrel give up while trying her toothy might against a stubborn nut?

Success ever happens to be proximitous and close,
Only a fistful of substantive efforts suffices to garner it;
Stay poised, I can organize your emotive efficiencies,
raise constructive proficiencies and mentor your lustrous leaps into prominence.

I wear varied garbs: my amicable
Credentials are so trustworthy!

Sometimes I don the mantle of a fair critic,
At others, I am someone who calms the qualms that rock you.

I have a certain way with the covert silence of a shivering night,
That is why the ensuing day turns out to be so candid and bright;
Let not any strain of perplexing quandary shackle you,
Devise measured dreams and you shall scale virgin summits,
All you need is an ingrained certitude that frames the parameters of life today.

Call me Patience! Your indivisible self,
Internalize my lasting virtues and be good at being a maestro in the art of living,
And make the most of adverse times by transforming their aggression into an amiable opportunity.

Dr. S.S. Aswal
PGT (English)
KV No. 2 AFS Ambala Cantt

97
Homecoming

Three decades down,
Millions of lessons learnt
But what I never got
Was that 'doing enough' is nothing more than a desire besought.
There are highs, there are lows
Silent cries from unexpected blows.
Wondering whatever happened to absolute loyalty and togetherness forever,
Or is being an enemy in disguise a new-fangled endeavour?
Shocked, jaded, angered, hurt so oft
With so much negativity I feel lost.

Three decades down
Millions of lessons learnt
But what I never forgot
Is that once I have done enough,
It's a full stop.
Life is not a bed of roses
And I ain't going down without a fight
Bruised knees or broken heart
Over and over, from the scratch I will start.
I will mark the highs, resist the lows
Beam with pleasure as positivity from within flows
Instead of wondering whatever happened
To friendship, kinship or things ideally peak
I will meet adversities head on
And let only my perseverance speak!
I am lost no more
This is my homecoming!

Ishita Mallick
TGT (English)
KV No. 2 NTPC Korba

98
In Search of The Lost Lamb

I was worried for I had lost my lamb,
To the ravages of an uncaring world;
Of grownups and, neglect of years,
Who remain oblivious to the damages done.

I was pained about his disappearance
From the protective shield of my cocoon;
A world I longed him to hold on to,
For his sake and reasons of my own.

I was shaken in my faith in the goodness
Of my innocent lamb trying to find:
Adolescence on his quivery legs and
Shaky steps of first born independence.

I wish and prayed for his safe return;
Into his familiar fold of care and comfort,
All the while aware of his need to find his
Self, amidst the dangers of preying wolves.

Bindhu R. Mathew
PGT English
KV No. 3 Bhopal

99
Indelible 2020 - A Nightmare

Resolutions, new hopes as a tradition; world plans every year.
Thanked yesteryear and welcomed 2020, a New Year
Quarter past new year, smooth though not cozy and rosy
Corona deadly, an uninvited guest turned hopes topsy turvy.
New social order emerged leaving no room to rejoice
Whole world undergoes weird life style against the choice
Four walled home for one and all, eventually turned life's dome
Isolation unlimited, Can anyone feel 'at home'?
Lock down impelled spirits down in everyone beyond estimation
Dismayed daily labour sky as abode chased unknown destination
Where to go, where not to go- bodies wrenched in loads
Transport none, just tracked their way sighted ribbon like roads.
Hitherto a touch if taken as a boon, abruptly turned a bane
Quarantine isolation jargon unheard, indeed profane
Wed locks with assemblage of near and dear to bless in line
Alas! Resorted, mere to get a ritual done 'online'.
Celebrities or chosen few, whatever the way they are addressed!
Throwing challenges unlimited to rank and file to get impressed
Common folk exhibit unity unquestionable with their claps and bells
Buyers for daily bread lined in circles waiting in front of shops and malls.
Corona plummeted comparable to a bolt from the blue,
A droplet from corona victim's mouth acts as deadly as a bomb.
Triggering unceremonious demand for sanitizers and masks
Touch on any surface leave us in distrust to accomplish given tasks.
Perform final rites in due course, fright prevents near and dear
Noxious Corona plays hostile role in human's final journey clear

Be indebted to doctors and nurses burning midnight oil to save lives
But for their dictum, many wouldn't witness tomorrow's strives.

Agitated mob desperate to swarm by lanes and roads
Police and doctors plunge into action selflessly to streamline
A salute to their service, pay gratitude in hefty loads
As humans the slightest etiquette due to stay in line!
The year 2020, a dreadful and in itself indelible
Even to a brief stopover in the era to come grossly ineligible!

Dr. B Lava Kumar
PGT (English)
KV Vizianagaram

100
Is it enough?

Is it enough?
That you say you care
While the presence quiterare
And the heart's always bare
Is it enough?

Is it enough?
That your hand is warm
While it rubs on the balm?
Or should it be calm
And screen me from harm?
Is it enough?

Is it enough?
That I see your teeth
While inside you seethe
Your anger you breathe
Is it enough?

No, the reason said
Not enough to contend
With feeling dead
Empty's the bed
Alone many have tread

Is it enough?
that purse's empty
but the service plenty?
and the deed pretty?
Is it enough?

Yes? Said a voice rough
It's a hand that's tough
That offers safety cuff
And soothes the cough
Ignore the voice gruff
I'm an emotion buff
It is enough!

Cherish me friends
I'm out of trends
With you in all your bends
My hand your every wound mends
And screens everything that offends
The guardian angel that GOD sends
Am I enough?
More than enough
My friend, your friendship has stuff?

Shesha Prasad Nadupalli
PGT (English)
KV Embassy of India School, Moscow, Russia

101
Musings with school mates

Alumni get togethers are events filled with joy at every Vidyalaya,
it's a great opportunity to meet and relive nostalgia.
Students of science, art and commerce indulge in funny banter,
reconnecting with long lost friends is an interesting matter.

A decade after departing the school,
memories are like shadows of that old tree that keeps one cool.
Canteen food is still spicy and worthy a drool,
last bench reminds me of myself; must say what a big fool.

Nicknames and monikers such as Teacher's pet,
are discussed in detail and rumours are put to rest.
Hall tickets on notice boards still put me through unrest,
while, playground still reminds me of my performance at best.

The bylines of hostel evoke a mischievous smile,
those days of fun and frolic makes our beloved warden still go rile.
Warden was strict and intimidating,
yet, dedicated and very caring.

Cricket matches were screened in the lawn,
discussion post screening used to stretch up to dawn.
Memories of midnight birthday celebrations are still vivid,
mess food never disappoints us from making us go livid.

Bidding goodbyes and farewell from school,
is always very unforgettable and very painful.
School is no less than second home to every student
luckily, time has not left any relationships with a big dent.

Meeting alumni is a beautiful experience,
as school invigorates wide emotions.
Giving back to the school is an act of devotion,
as values imparted in school are eternal sources of inspiration.

J.S.V. Lakshmi
Assistant Commissioner
KVS RO Hyderabad

102
The Unknown Soldier

There he stands all alone,
Silhouetted by the red sun
On that high pedestal moun',
That man nor beast dare tread upon.

There he stands all alone,
A statue of determination
All bursting emotions contained within
That dark cove of secrecy.

There he stands all alone,
An epitome of courage
At the threshold of Threat
Of the unseen bullet!

Yet dons the unknown soldier,
His rifle, to pen the poetry of the Patriot!

Here, he stands alone,
Them to bury, that he knew so well,
Them to bury, that he knew not at all,
Them to bury, he loved them all!

Here, he stands alone,
The debris of disaster to clear,
The wounded and the sick to care,
The dying and the forlorn to care!

Here, he stands alone,
Tears frozen in his eyes,
Unmindful of day nor night
Numb is his heart with pain

Yet prays this unknown soldier,
His hands hold the hymn of humanity!

G Jyothi
TGT (English)
KV Picket, Secunderabad

103
Circle of Life

When 'I' met an 'I', it became 'We'
When 'I' is lost, 'We' became 'He'.
I saw and ignored, I was ignored
I saw and judged, I was judged
I saw and smiled,
Thousand faces smiled with me
Smile on faces, returned multiplied.
I loved and loved, find no reason to fight,
Learnt to sacrifice and searched peace inside
Hatred made me blind, lost and deprived
Stressed and depressed, lonely and strived.
The journey of humanity is difficult to ride
But the path will eternally be shining bright.
The path is tough, the path is high
The path leads to the death in life,
Death comes, but once not every day.
Choose Life, choose to be alive
Before you're dead, Don't die.

Dhwanika Bhatt
PGT (English)
KV No.1 Sector 30, Gandhinagar

104
In line with on-line

At the threshold of a new beginning, unsure, hesitant
With fingers quite used to the white dust,
Now fumbling with keys and clicks
With ears longing for the familiar sounds
Now strained with the eerie silence
With eyes that probe the delicate blinks
Now searching among the void of icons
With a heart that beats for a passion profound
Now missing its beat with the slightest trouble
With a mind that raises ahead to answer every call
Now holding itself back with fear unfounded
With legs that race to attend every work
Now set to rest, to be seated and confined
"But why?" I ask myself
"Adapt and adopt" I hear my voice
"Challenges?" "Nay, Opportunities" I am convinced
"Teacher, yet a warrior" I remain reassured
Yes, times are changing, so must I
Student and teacher, together we must learn
Negotiate the cyberspace with techniques new
Virtual yet real, experiences fresh
Explorations to excel in this new avenue.

Jyothi V N
PGT (English)
KV Adoor

105
Patriarchal Cage

Lots of sad faces, nearly to mourn;
All because, a girl was born

Some concerned about your future, some about the legacy;
But amidst all, I was only looking at my beautiful bundle of Ecstasy.

Your hands were lilies, your face the moon;
Your lips were the pretty petals, that smiled too soon.

Looking at your face, I soon realized;
How to cope up with the society that is differentially categorized.

The condition of women is still deprive;
Therefore, you have to find your ways to survive

They'll ask you about the roles you do must;
But remember my dear, Life is not a 'local seat' where you can adjust.

They'll make you cry, telling you are not appropriate;
As they do not accept the fact that you are not ready to 'negotiate'

They'll demolish your character; they'll tear your thoughts;
They'll ruin the ones, who were ready for you to fought

It's time to show them you are afraid not;
With your intelligence and perseverance, you can make everything sort

You are the goddess, you are the nation;
You are the mother of a new creation

So, have a room for yourself, etched with the thoughts;
Full of your 'desired things' that society termed it as 'do-not's'

Set your goals, make a plan;
Let your spirits be free as the opportunities given to a patriarchal man

Singer, Surgeon, Sportsperson -You can be anything;
Don't hesitate to fail, as failure is just nothing

You are the master of your own thoughts, the lyrics of your song;
But my dear! There is no escape for hard work, if I am not wrong

The world is your, you own the stage;
Be limitless as the sky, and not a victim of the Patriarchal Cage.

Simranjeet Kaur
TGT (English)
K.V. No.1, R.C.F Hussainpur, Kapurthala

106
Life is Bliss

Life is Bliss
Embraced with surprises and miracles and ups and downs
Be not down with despair
For elegant snow sometimes carry hailstones
And beautiful roses are sprouted on a thorny bed,
Lovely flowers that bloom today
Might wither and die tomorrow
But there are always new beaming buds
That will awaken you and smile
Bidding goodbye to yesterday's misery,
Autumn creeps in setting fire to the leaves
Leaving the tree bare and bald
Making way for the new life
That blossoms in the spring
Paving way to new hopes,
Dusk falls and wraps everything
In her black epitomizing evil
Leaving you with tired eyes and some deserved rest
But dawn breaks with a ray of hope
Giving everyone the strength to strive.
Success and failure
Happiness and sorrow
Are imposters that teach life to us?
Success cannot blossom without hardships
Nothing can teach better than a failure,
For every dark night
There is a brighter day
For every fall
There is a new high
Forgive, forget and flash a smile to spread happiness.

N. Padma
Primary Teacher
KV GOC (Sr) Trichy, Tamilnadu

107
Silver Lining to the Cloudy Covid

Covid-19 Pandemic
Gripped the whole world
Unexpectedly – unknowingly
Collapsing people & nations
Affecting health & economy
    The world while soaring high
    Brought down to stand still
    Imposition of lockdowns
    Restrictions on the risky movements
    Humans became grief stricken & fear driven
Clubs & pubs, ceremonies, functions
Get togethers & celebrations
Halted all together
Wealth & economy are not bothered
Health care is given importance
    For safety & security
    Masks & hand washes became mandatory
    Isolations & quarantines mantra of the day
    Appreciation to social distance
    Honouring to 'Namaste' culture
Scientists plunged into action
To discover vaccine as a solution
Doctors & nurses rendered services
To save life of rich & poor
Global fight against Covid to contain & control
    Pollution is reduced
    Flora & fauna well flourished
    Simplified life
    To sustain health & harmony
    Through traditional cousine & grandma tips
Importance to life than luxuries
Eliminating the greed

Embracing only the need
Eccentric monkey minds
Stopped jumping either & thither
Increasing focus & concentration
Time found for near & dear
Every house became temples & churches
For offering prayers to the Almighty
Bonding in the community care & share
Gardening & music
Became passion of the day
To get solace & relaxation
Eat right – balanced diet
To make oneself fit
Yoga, exercises & breathing techniques
Gaining significance
Halted all crazy doings & over indulgences
Brought human life on to the track
of self realization & serenity
Like a lemonade made from lemon
Silver lining & positive vibes
Even in cloudy covid pandemic
Would soon brightly shine for a better world
To make everyone happy & healthy

J. Rama Devi
Principal
KV No.1 Golconda

108
En Route

Sand of endless thoughts,
Mould of soulless words,
Stretch of listless habits,
She crossed the curves,
With anticipation in her eyes,
To reach a finer trail.
Untrodden path,
Sheathed with mold, yet lustrous,
Sky murky with out-stretched branches,
The trees creaked in swirling wind,
And the shadows taunted with a grin.
Vague chatter pricked her ear,
Seems soothing and amusing to hear,
Enticing to traverse there,
Advanced on foot all bare,
On a stone she tripped with tears,
Vision blurred and turned despair!
Little headway made with aspiration,
To be on the road as her expectation,
Engraved in a timber of wood,
Words of wisdom, there she stood,
Read the lines, letters of truth,
Lessons of life, it is uncouth.
Swirls and whirls,
Curves and turns,
Advancing the detour,
She crossed the moor,
With resolution and fortitude,
And finally.

Mary Francina A A
TGT (English)
KV No. 2 AFS Dundigal

109
My Calling

I looked into my heart and chose.
I had followed the voice of those
Who are young bright and inquisitive.
Of the hardships along I was sensitive
But I had heard my calling and answer I must.

For the first time, a young girl left her home
The comfort of family and friends was gone
To make space for self in a new strange place
Homesick, a little scared and all out of place.
But she heard them call and to answer she went.

Her first class, her first school, her first posting
She entered a bit hesitant, praying and hoping.
Curious faces pleasantly turned and smiled
They eagerly told and excitedly questioned
Because she had heard the call andanswered.

Before I was a teacher, it seemed an impossible life
Shifting from place to place, starting a new life
Again and again. It had seemed impossible as well
To fit so many children in my heart so well.
But it was my calling and I thank God I answered.

Roselyn Khawbung
PGT (English)
KV GC CRPF, Agartala

110
Be Optimistic in Adversity

Be optimistic, in adversity,
Don't lose hope, do some activity.

During difficulty, don't shed tear,
With your will power, overcome fear.

In times of crisis, don't display anger,
Grit is required, to face danger.

Act, act, without any break,
Life is not a piece of cake.

Do some creative work, during leisure,
You will feel, joy and pleasure.

Dark will be over, light will be sure,
As precaution is always better than cure.

Fill your life with hope and positivity,
Be positive, in adversity.

Narendra Singh
P.G.T (English)
KV Bhind

111
One Writ(h)es

When a pain, an enigma, an experience lives through people, one writes.
As a homemaker wakes up to her inner clock tracking homely chores by cooker whistles, one writes.
As the school wakes you up from the cosy womb of the blanket on a rainy day, one writes.
When the clotted thoughts and feelings in the veins of a pen flow on a paper, one writes.
When thoughts are moulded into shapes of words, one writes.
When what bleeds within is ink, one writes.
When the scattered metals of thoughts assemble in a magnetic moment, one writes
One writhes in agony before one writes.

Santhosh Kumar Kana
PGT (English)
KV INS Dronacharya, Kochi

112
We Shall Survive

Never did we imagine, even in our wildest dreams
Of days and nights such as these
Locked down and staying indoors
Shut from the hustle and bustle,
which we had always endorsed
Staying at home now would break the chain indeed
So beat the pandemic by thought and deed
The enemy is tiny and invisible
And it certainly seems invincible
Frustrated and anguished we watch in pain
The relentless and ruthless march, but in vain
The world is on the run for a vaccine
The doctors and nurses are working round the clock
Seeing the trials and travails strewn
Oh! these times will change
Man like the Phoenix will rise again
He has the courage and power within
He has done it before and can do it again
We will wage the battle to win the war
The war against Corona, we will win
Our victory is just around the corner
And we have the will to conquer
Fight it we will, with our indomitable spirit
To beat the odds hands down
We will not rest till we see the dawn
Things may change and we will too
To make a better world for me and you
Let's believe in the supreme
To free us from the stranglehold
Hold on to hope! And never let it go
We shall survive, sure we will!

Geetha S. Nair
PRT
KV No. 2 Naval Base Kochi

113
Being an Academic Corona Warrior

Teaching is a profession close to my heart.
Being a teacher, I always felt young at heart.

Company of students made me versatile.
I never knew, I could be adroit.

The spirit to give quality and quantity of result.
Always made me teach, keeping students' best interest.

The passion to instil values was always there.
This made my journey in KVS absolutely clear.

The data were required at the drop of a hat.
Often made me lost in the ocean of figures and facts.

The life was going on its own pace.
And then there was COVID-19 pandemic to face.

Unexpected and unimaginative scenario occurred.
The work from home culture prospered.

I wondered and introspected, if I would fit into it.
There was a call of my subconscious to dive into it.

The Google world was everywhere sponsored.
As the virtual classrooms day by day prospered.

My brain cells started functioning in a new order.
As my aspirations got hold of a new dimension.

The online inservice course was an icing on the cake.
The virtual world was embracing me with its new face.

I started learning the latest technology.
To be at pace with the education world building up new terminology.

My imagination got wings to conquer the digital world.
To utilize the latest technology in improving the virtual Classroom world.

By God's grace, I still intend to impart education in best manner.
And keep my spirit alive to face the challenges of the covid 19 infected world in every manner.

Jyoti Sharma
PGT (English)
KV ONGC Dehradun

114
Best Friend

Friends are many whom I knew
But like you are very few
Hope our friendship continue
Fresh and pure as drop of dew.

Though we are far apart
But our soul can never depart
Moments which we have shared in past
Gives me courage to face the dark.

Journey of life, what it means
Is not as beautiful as it seems.
In its way are miserable scenes
Which I would have not solved if you had not been.

I still remember the time, when things were not fine
Your support at that time came as DIVINE
I believe that ANGELS can't come every time
THAT'S the reason God made Friend's so prime.

Amit Kumar Pandey
TGT (Maths)
KV Aliganj

115
Divine Call

Oh my dear,
see.....
In the midst of darkness,
the sun rising up
with a luminous wake up call,
smiling with bright light,
the light of wisdom,
the light of divine love,
the light of a divine vision.
You may turn a deaf ear
to unknown divine loving call here .
May be this time,
May be next time,
May be this birth,
May be next birth,
May be next..... next..... next.....
But you can not force the sun not to rise in this celestial sphere,
You can not force the inquisitive " I " within you not to awake,
but to sleep incessantly my dear .

Nita Patra
TGT (Maths)
KV No 1, Salt Lake

116
A Change With in

Within me a voice arose,
Am I molding these young ones into an ideal they should be?
Am I carving the imprints on their tender hearts
That make them swim through the ocean of this world
Am I seeing myself in them?
If yes, let me prune myself
Cut the horns of pride, suppress the whims of anger,
Snub the mirage of perfection
let me learn to enlighten their pure mind
Kinder curiosity, Ignite self-esteem,
Gird them with the weapons of multitasking, sensitive to humanity,
Contentment and humility
They should see the real themselves in them
And world and I should see wonders in them.

Anita Paul
Headmistress
KV Army Area, Pune

117
Life

I lived in the world,
But didn't let the world live in me.

Was with everyone,
But was with none,
Showed an attachment,
With a sense of detachment,
Expected nothing,
Accepted everything.

Then, there was turmoil,

Hoping against hopes,
I preserved the pleasure,
And, dropped the suffering,
Without perceiving,
I let the world live in me,
I lived in the world.

I realized,

Everything happens gradually,
But also and equally true is,
Happenings happen in a moment.
And understanding takes time.

And, I resolved, to live in the world,
But, not let the world live in me.

Sridevi Vijay Shinde
PGT (Biology)
KV INS Hamla

118
Teacher

"Teacher", the word that reminds
me of how it all began,
my very first day
I tightly held on to my mother's hand
Scared, afraid and all alone,
Not feeling to let her go.
But was then welcomed
To a new life.
And all my fears wiped
Don't know what made me trust you.
Maybe, when you told me,
"I will be with you".
Teachers are never in it
Merely for the income,
But they stay and watch it
What comes as the outcome.
They are here to give us something
To think upon
The world, us, and the changes they brought
With every chapter, they taught
The Hopes, smile they brought
Their every single effort
Can never be equated to nought
Even now, when the pandemic strikes
Everyone moves aside
Only in you, does the fire ignites
To never break the faith you decide
You adapt yourselves in whatsoever
Ups, downs, much or fewer
Technology, offline mode, you attain
A child's future, in your hands, is certain.

Asha Yadav
TGT (English)
KV ONGC Dehradun

119
The Lofty Pines

The giants standing by the pavements,
laugh at the pygmies traversing beneath.
Register their authority,
Proclaiming to be the mightiest of all.
The instruments of nature dance to the tune of these colossus:
The sun dares not enter the gates of these devils,
And merely peeps to feel humiliated;
The showers percolate and shed global tears;
The wind subdues and break her head;
Nothing can move these lofty pines:
They had been there and will be there and see the generations passing by.

Ramesh Chandra
PGT (English)
KV Upper Camp, Dehradun

120
Tribute to My Kingdom

A majestic arch, paving to a new kingdom.
The realm of rich culture and heritage,
Glittering source of lectures, symposiums, experiments
Epitome of knowledge and research,
Moulding young minds into think –tanks,
Shaping brighter and meaningful future.

Lanes with vibrant pathways.
Dense canopy of trees,
Spreading aesthetic spirit into the air.

Huge buildings built like ancient monuments,
Department names engraved magnificently,
Beauteous gardens and lushful greenery,
Hugging the department walls!

White coat clad doctors in making rushing
To the medical department,
Energetic, dynamic, high spirited boys and girls
Heading to engineering, management studies,
And other innumerable courses.

Oh! What a wonderful morning scene,
When every young heart is aspiring to attain
Only knowledge and quality education.
Some even catching up with hot chai and
Delicacy of samosas alongwith friends before reaching
To One of the largest library of the world.

As I stepped, into my abode where -
I would spend another two years of my lifetime,

I had fears, but enormous courage,
The world class professors never brought boredom,
Even during endless lectures.

Post – lunch, most demanding time,
Practical lessons,
Dissecting live animals,
Setting up experimental apparatus,
Taking accurate readings,
Verifying them with the Heads,
My goodness!
Herculean task…

As the 4'oclock long bell went,
Coming out of the department,
With smiles on the faces,
The mess, Maharaj Ji in the hostel,
Serving hot snacks and tea, motherly feeling!
Filled us with superfluous energy,
Rejuvenated,
Climbing the steps to my room,
To set for the next day.

Awarding degrees,doctorates, and honours,
The kingdom of Banaras Hindu University.
The seeds sown by Pandit Madan Mohan Malviya,
Legacy of moral values, class education,
remarkable research and publications,
Still standing modestly,
My profound salutations to the founder,
and all the great teachers of BHU.

G. Vijay Lakshmi
PGT (Biology)
KV No. 2 AFS, Dundigal

121
Working Woman

People say, "What do you do?"
Some says, "Who are you?"
She works for day and night,
And always says, all right.
Everywhere she can excel
And anywhere governs well.
You sit idle at home, says some,
Don't do this and say, just keep mum.
Around the clock she tries to be true,
But someone hurts her by saying, who are you?
All the time the insult she endures,
Perplexed, she finds her identity obscure.
She can't demand on any ground,
She knows she will get the wound.
Who is going to have her lawyer find?
Oh! Man transfer only love to womankind.
Love and care she imparts,
Patience, endurance and kindness she learnt the art.
I do believe her love to be so pure,
Nobody knows behind her smile what she endures.
What does she demand as pay?
Kindness, love and care, she says.
A woman is like a universe that never stops working,
Some are paid and some are not, but still they are working.

Rita Attri
TGT (English)
KV 14 GTC Subathu (H.P.)

122
Recalling Gandhiji in Covid-19

I very much remember an interesting Odia lesson
That I had read in class seven
A thought provoking prose piece captioned Soul Education
(Atmik Siksha)
Penned by Mahatma Gandhi, the Father of Nation.

One memorable sentence in that lesson
We all learned thoroughly without exception
as it was an important question for examination
To be answered with elucidation and interpretation.

And the sentence goes like this
"A teacher while staying in Lanka (distant place)
Can profoundly influence behaviour of learners
with his unstinted integrity and impeccable character".

The statement is still relevant in present critical situation
When the schools are closed and the entire education is in online mode.
Role of teacher is is not only an educator but motivator
for student who s are already reeling under stress. Strain and depression

Their feelings are to be shared and genuine concerns should be cared
with more passion, dedication and compassion
despite all sorts of technical glitch and obstruction
as an honestly shared thought always reach its destination.

Biranchi Narayan Das
Principal
KV. Gopalpur Military Station
Golabandh, Berhampur

123
Soft winter sunshine

Childhood days are like a treasure,
Their worth one can't measure
Between the dusk and the dawn of life's essence,
comes the mid-passage of sweet juvenescence.
Let kids be kids, just them be,
Raw, unkempt, natural let their bath be the sea.
Let them stare at the sky and the stars,
And help them find animals in the clouds.
This child of destiny, you look at so,
Please come closer and you will know.
Be a gardener, very caring and wise,
Like tending little plants, through a parent's eyes
Thank you lord, for these children of mine,
Who teach me things and awaken my mind.
In the afternoon of time, and almanac of life,
Childhood days remain like soft winter sunshine.

Mukesh Kumar
PGT (English)
KV Barkakana

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

https://kvsangathan.nic.in

@KVSHQ @KVS_HQ @kvshqr